द्वितीय अध्याय

''चंद्रकांता की कहानियों का संक्षिप्त परिचय''

''चंद्रकांता की कहानियों का संक्षिप्त परिचय''

प्रस्तावना -

कई कहानी-संग्रहों और उपन्यासों की रचयिता चंद्रकांता हिंदी की एक प्रगतिशील कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुई हैं। उनका लेखन बेहतर दुनिया और बेहतर भविष्य की चिंता से प्रेरित है। आजादखयाली, दृढ़ निश्चय, जुझारूपन और संघर्षशीलता की झलक उनकी कहानियों में सर्वत्र दिखाई देती है। किसी खेमेबाजी में विश्वास न करते हुए उन्होंने अतीत, वर्तमान और आगत के चेहरे को पढ़कर उन्हें संवारने का प्रयास किया है।

उन्होंने अपनी कहानियों के कथ्य, जीवन के बहुविध क्षेत्रों से चुने हैं। समकालीन जीवन की विसंगतियों, विघटित मूल्यों, बदलते खोखले होते मानवीय रिश्तों और आर्थिक एवं सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों को चंद्रकांता ने अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप में रूपायित किया है।

अनिलकुमार तिवारी ने समीक्षा पत्रिका में कहा है कि, ''उनके लिए साहित्य इंसानी जीवन की शर्त है, जो समय का जीवंत साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए सही-गलत की छान-बीन करता है और विविध स्थितियों, घटनाओं तथा परिवेश से जूझते पात्रों की मनोव्यथा का आकलन करता है।''[1]

चंद्रकांता ने जो भी लिखा है वह अनुभूति के ताप में तपकर लिखा है तथा जो भी शिद्दत से महसूस किया है उसे बृहत्तर समाज से जोड़ने की कोशिश की है। वे आम आदमी की पीड़ा को स्वर देते हुए उसकी मुक्ति की कामना करती हैं। तेजी से बदलते घटना-क्रमों तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं से उद्भूत जन-साधारण के मानसिक अंतर्द्वंद्वों का जिक्र उन्होंने अपनी कहानियों में बड़ी खूबसूरती के साथ किया है। चंद्रकांता की कहानियाँ कथ्यगत विविधता से ओत-प्रेत है। उनमें कहीं टूटते-बिखरते संस्कार-जन्य विश्वासों और मानवीयता के बदलते चेहरों का वर्णन है तो कहीं मन में पलते भ्रम और टूटते मानवीय रिश्तों की संवेदना का भी समावेश है। यातना के साथ जीना आज मनुष्य की नियति बन गई है।

अनिलकुमार तिवारी ने समीक्षा पत्रिका में चंद्रकांता के बारे में लिखा है कि, ''चंद्रकांता सभी ओर व्याप्त दु:ख, कष्ट, आतंक और अनिश्चितता के बीच भी किसी दल-दल में फँसने के बजाय इससे बाहर निकलने के लिए कठिन संघर्ष करने में विश्वास रखती है। मानवीयता के चेहरे को सुधारने-संवारने की चेष्टा ही उनके लेखन का मूल उद्देश्य है।''[2]

'सुरज उगने तक' कहानी संग्रह में कुल तेईस कहानियाँ संकलित हैं और दूसरा कहानी संग्रह 'दहलीज पर न्याय' में पंद्रह कहानियाँ हैं। इस कहानी-संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक 'सूरज उगने तक' है।

चंद्रकांता के इन दोनों कहानी-संग्रहों की 38 कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है -

2.1 'सूरज उगने तक' कहानी संग्रह -

2.1.1 'सूरज उगने तक' -

इस कहानी में सरकारी नौकरी में ऊपर से नीचे तक व्याप्त भ्रष्टाचार के ताने-बाने से बुनी यह कहानी तनाव के वातावरण में शुरू है।

कहानी का नायक विमल एक गरीब निम्न-मध्य वर्गीय युवक है। उसका पिता स्कूल मास्टर है। विमल के पिताजी सरकारी कर्जा लेकर बेटे को इंजीनियर बनाते हैं। एक शरीफ, ईमानदार, पढ़ाऊ लड़का बनाते हैं।

विमल इंजीनियरींग में विश्वविद्यालय में प्रथम आता है। प्रथम आने के बाद चीफ इंजीनियर दर साहब के यहाँ नौकरी करता है। विमल ईमानदार लड़का है, इसलिए वह अपनी मर्जी से काम करता है। ऐसे ही एक दिन काम करते समय एक मजदूर दुर्घटना में घायल होता है। तब विमल उसे अस्पताल लेकर जाता है। वहाँ सब उसकी देखभाल करते हैं। यह दर साहब को अच्छा नहीं लगता। दर साहब उसे नौकरी से निकाल देने की धमकी देते हैं। लेकिन तब भी वह उनकी एक नहीं सुनता। तब दर उस पर नौकरों को फुसलाने का आरोप लगाकर उसे काम से निकाल देते हैं।

कहानी का दूसरा पात्र है दर साहब। दर साहब यह एक भ्रष्टाचारी इंजीनियर है। वह मुख्य होने के कारण एक नामहीन मजदूरों से लेकर सेठ, ओवर सियर, डिविजनल इंजीनियर, कांट्रेक्टर से उपर से नीचे तक धाँधली और हर एक से कमिशन और इतना ही नहीं 'चायपानी' की रकम लेता है।

विमल दूसरी ओर नौकरी के लिए कोशिश करता है। लेकिन दर साहब उसे नौकरी न देने के लिए कहता है।

विमल ईमानदार, खुद्दार, चापलूसी से कोसों दूर भ्रष्टाचार एवं झुठे अहं का विरोधी तथा स्वाभिमानी है। यही स्वभाव उसके लिए घातक साबित होता है। फिर भी वह अपनी खुद्दारी नहीं छोड़ता और अंततः सत्य की विजय की आशा लिए रात का अंधेरा छंटने और सुबह सूरज उगने तक इंतजार करने का साहस दिखाता है। आलोच्य कहानी में भ्रष्टाचार दृष्टिगोचर होता है।

2.1.2 'पहाड़ी बारिश' -

कहानी में नायक विमल पुनः मौजूद है, लेकिन सर्वथा नए परिवेश में। विमल की पत्नी श्री संयोगवश अकेले जम्मू से श्रीनगर की यात्रा में अपने पूर्व-परिचित कुमार का साथ पा जाती है। फिर अधिकांश कहानी स्मृतियों के आधार पर आगे बढ़ती है।

इस कहानी में अतीत की स्मृतियों के साथ वर्तमान यथार्थ का समावेश भी होता है। यहाँ चंद्रकांता की प्रकृति-चित्रण क्षमता भी दर्शनीय है। पहाड़ी बारिश में श्री और कुमार बनिहाल में एक होटल के एक ही कमरे में रात गुजारने को विवश होते हैं। अपने अब तक के वैवाहिक जीवन में दोनों सुखी हैं। श्री कुमार को इंसान नहीं देवता मानती है। जिसके बताए मन के अनुशासन का पालन करती हुई वह देह संबंधों से ऊपर उससे एक उदात्त अंतरंग मानसिक संबंध जोड़ लेती है। पहाड़ी बारिश की इस निचाट एकांत रात में इसी उदात्त अंतरंग संबंध की परीक्षा की घड़ी सामने खड़ी रहती है। कुमार आदमी की तरह इस परिवेश में तटस्थ रह पाने का विश्वास खोने लगता है। जबकि उदात्तमना श्री को देह के साथ होने और बरसों से पोसे विश्वास के झूठे होने की उम्मीद कतई नहीं है।

कहानी का अंत यथार्थ से परे एक बहुत ऊँचे आदर्श में दिखाया गया है, जिसमें कुमार तो अपना देवत्व खोकर एक और आदमी का-सा आचरण करता है, किंतु श्री देह-संबंधों से परे केवल

उदात्त मानसिक अंतरंग पर स्थित रहकर देवीतुल्य आचरण करती है, जो आम व्यवहार में बहुत कम मुमकिन है।

2.1.3 'कित्थे जाणां पुत्तर ?' -

इस कहानी में पंजाब में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण किया है। कहानी का प्रमुख पात्र बुढ़ी औरत बेजी है। वह करीब अस्सी या नब्बे साल की हुई है। बचपन से वह गाँव में ही रहती आयी है। गाँव भी बहुत छोटा है। तीस-चालीस घरों का गाँव है। बुढ़ी बेजी की बहुत उम्र हो चुकी है। इसी कारण वह कुछ भी बकती है। उसके परिवार में बेटे, बहू, बेटियाँ, पोतियाँ आदि का बड़ा परिवार है। बेजी को गाँव के सब लोगों का हाल पूछने का शौक है। वह हर समय कोई भी मिले तो उसे चार-पाँच अच्छी बातें सुनाती है। गाँव में और आसपास में हर रोज आतंक होता है। आतंकवादी खलिस्तान और दूसरे अनेक आतंकवादी आतंक फैलाते हैं। हर रोज सुबह-श्याम कितने कत्ल, मार-पीट, खून-खराबा, लूट-मार होती है। लेकिन गाँववाले गाँव छोड़कर दूसरे शहर नहीं जाना चाहते। दूसरे आड़-पड़ोस के लोग गाँव छोड़कर कहीं और चले जाते हैं।

कहानी का दूसरा पात्र किशना भी अपने पिताजी को लेकर शहर जाना चाहता है। लेकिन पिताजी अपना गाँव, खेत-खलिहान छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते। किशना गाँव से थोड़ी दूर राजमार्ग पर मेकॅनिक की छोटी-सी दुकान खोलता है और वहाँ जाना चाहता है। हर दिन गाँव छोड़ने के लिए घरों में धमकियों भरे पत्र आते हैं। एक दिन गाँव छोड़कर जाना तय होता है। उसी दिन रात में बेजी के दरवाज़ों पर थापें पड़ती हैं। आतंकवादी बंद दरवाजों पर ही गोली बार करते हैं। गोलियाँ बंद दरवाजे को पार कर दीवारों की छलनी करती हैं। बेजी के घर की धरती खून से नहा उठती है। सब खत्म होता है। सिर्फ बेजी ही जीवित रहती है। बेजी के सिवा घर में कोई नहीं रहता।

इसी 'कित्थे जाणां पुत्तर ?' कहानी में पंजाब में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण किया है। आतंकवादी, मशीनगन, एके सत्तेचालिस, एके छप्पन आदि हथियार लेकर लोगों की हत्या और खून करते हैं। आतंकवादी के भय से गाँववाले श्याम के सात बजे से ही दरवाजे बंद करके घर में बैठते हैं।

हर समय आतंक का भय मन में रहता है। चंद्रकांता ने पंजाब में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण आलोच्य कहानी में किया है।

2.1.4 'रहमते बारान' -

इस कहानी में भी चंद्रकांता ने कश्मीर और पंजाब में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण किया है। कहानी की नायिका सुषी शहर में पढ़ाई करने जाती है। काफी दिनों बाद वह गाँव वापस आती है और अपनी पुरानी सहेली हसीना से मिलना चाहती है।

उसी समय शहर में चारों तरफ आतंक फैला हुआ था। कर्फ्यू लगाई गई थी। कोई भी शहर में नहीं घूमता था। सुषी अपने भाईयों और दो पुलिस द्वारा मनाई करने के बाद भी जीप में बैठकर सहेली से मिलने जाती है। लेकिन वहाँ के सब लोग गाँव छोड़कर दूसरे शहर में गए थे। सिर्फ हसीना के घरवालें ही वहाँ रहते थे। जब सुषी हसीना को पूकारती है तब हसीना घबरा कर दरवाजा खोलती है और गले लगा के रोती है।

हसीना के भाई को आतंकवादी सरकारी जासूसी समझकर मार डालते हैं और हसीना के पड़ोसी भट्ट साहब पर आतंकवादी अत्याचार करते हैं। इसी कारण भट्ट साहब घर छोड़कर किसी दूसरे शहर रहने जाते हैं।

आतंकवादी का डर हर मनुष्य के माथे पर रहता है। आतंकवादी खून, बलात्कार, मार-पीट करके शहर में दंगा-फसाद करते हैं। आतंकवादियों के डर से गाँव उजड़ गया है। चंद्रकांता ने कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण इस कहानी में किया है।

2.1.5 'नानी तुम ?'

यह कहानी स्मृतियों पर आधारित कहानी है। यह कहानी नानी की याद और उनके सुनाए किस्सों से शुरू होती है। 'नानी तुम ?' कहानी वस्तुतः पति-पत्नी के मानसिक द्वंद्व का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

कहानी की नायिका प्रिया अमरिका में एम्. डी. करने के बाद वहीं अस्पताल में नौकरी करती है। उन्हीं दिनों एक पार्टी में उसकी मुलाकात प्रभाकर से होती है। मुलाकात धीरे-धीरे शादी में बदल जाती है। दोनों शादी के बंधन में बँध जाते हैं।

प्रिया को यह निर्णय बाद में खुद ही हैरान कर देता है। प्रिया और प्रभाकर का संसार साल भर ठीक-ठाक चलता है। जब से चिण्टू गर्भ में आता है तो नई परेशानियाँ सामने आती हैं। चिण्टू जन्म से ही दिल का मरीज होने के कारण दोनों में संघर्ष होता है। ''स्वाभाविक-सी नोक-झोंक कब इतनी इतनी कड़वी हो गयी कि दोनों एक-दूसरे के दुश्मन समझने लगे मालूम ही न पड़ा।''[3]

प्रिया और प्रभाकर अलग-अलग रहते हैं। प्रिया अकेलापन महसूस करने लगती है। अपना अकेलापन दूर करने के लिए वह अपने पति के मित्र करन के साथ घूमने जाती है। होटल में मिलने जाती है। हर रोज अस्पताल से करन को फोन करती है।

इसी प्रकर डॉ. प्रिया अस्पताल की नौकरी में व्यस्त है और प्रभाकर अपने दिनों-दिन फैलते व्यापार से त्रस्त है। उसकी व्यस्तता दोनों को दो दिशाओं में ले जाकर अमिट दूरी पर खड़ा कर देती है। प्रिया अकेली रहकर नानी की सुनी-सुनाई बातों को ध्यान करती है, जैसे- जिसने बचपन में नानी की नसीहत के बावजूद इंद्रधनुष्य को छुने और पास रखने की जिद् की थी। उसे इस सच्चाई का एहसास हो जाता है कि इंद्रधनुष्य छूने और पास रखने की चीज नहीं है।

इस कहानी में दांपत्य जीवन के तनाव और अनिवासी भारतीयों की जीवन शैली पर भी प्रयाप्त प्रकाश डाला है।

2.1.6 'मामला घर का' -

'मामला घर का' एक अलग संवेदना की कहानी है। कहानी के प्रमुख पात्र शिब्बू और उम्मी हैं। पत्नी उम्मी की अपना घर देखने की ललक और त्रियाहट के कारण हारा उसका पति शिब्बू अपने पत्नी-बच्चे के साथ पंद्रह वर्षों के बाद जाने-पहचाने पर अब अजनबी-सा अपने घर लौटता है। वहाँ वह धरती के उस नायाब टुकड़े पर कदम रखते ही खोजने लगता है, अपने पैरों के मिट चूके आड़े-

टेढ़े निशानों को, मानो वे ठप्पे की तरह वहीं कहीं आसपास अंकित हो गए हों और उसके पीछे छूटे बचपन के साक्षी हो।

वह उन्हें वक्त की बेवफा धूल-मिट्‌टी में ढूँढ़ने लगता है, जिससे उसके भीतर बदहवास आँधियाँ चलने लगती हैं। शिब्बू को घर पर पहुँचने पर पता चलता है कि उसकी माँ का देहांत जाने कब का हो चुका है मंझला भाई दूर शहर में नौकरी करता है। घर पर केवल पुलिसिया नौकरी से रिटायर बड़े भाई अकेले रूग्णावस्था में पड़े हैं। अपने निर्मम और क्रूर स्वभाव के कारण वह जिंदगी-भर एक अद्‌द-बीवी नहीं जुटा पाए। उनके अशक्त एवं रूग्ण दशा तथा एकाकीपन को देखकर उनके प्रति उम्मी की सहानुभूति उमड़ पड़ती है। वह भाई के प्रति कठोर और निर्मम हो चुके अपने पति शिब्बू से उन्हें साथ ले चलने के लिए हठ करती है।

संपूर्ण कहानी में 'त्रियाहठ' के उस प्रचलित मुहावरे को बदलने की कोशिश की गई है, जिसके अनुसार त्रिया-हठ केवल स्त्री के स्वार्थ और जिद का बनकर रूढ़ हो गया है।

2.1.7 'तुमने कोशिश तो की' -

इस कहानी में दार्शनिकता और प्रतिकात्मकता की गहीर छाप है। इसमें नन्हीं ओस-धूली दूब, उज्वल-भविष्य की कामना से युक्त बेटे प्रणव का प्रतीक है, जबकि उसके ऊपर पेड़ से पियराकर टूट-टूटकर झड़नेवाले बूढ़े और कमजोर पीले पत्ते वृद्‌ध माता-पिता के प्रतीक है। संबंधों के मशीनीकरण तथा उसके भीतर के खालीपन को महसूस न कर पाने की चिंता भी इस कहानी में विशेष रूप से आरेखित की गई है।

कहानी का प्रमुख पात्र प्रणव एम्. ए. इंजीनियरींग करने के बाद कॉम्प्युटर की पढ़ाई के लिए अमरिका जाता है। तीन साल वही रहता है और माँ-पिताजी को सिर्फ छः महिने के बाद एक बार फोन करता है। माँ चाहती है कि बेटा यहीं नौकरी करें। लेकिन बेटा फोन पर ही बताता है कि मैं और यहाँ पढ़ना चाहता हूँ। अच्छे युनिवर्सिटी में पढ़ना चाहता हूँ। माँ का दिल अनेक बातों से डर जाता है। उन्हें शोभा जो कहानी का दूसरा पात्र है बहकाती है कि - अमूक इसका लड़का अमरिका गया। माता-पिता को देखना ही नहीं चाहता। इसी कारण सावित्री डर जाती है कि कहीं लड़का हाथ से ना जाये।

प्रणव के पिताजी अर्जुन समझदार हैं। प्रोफेसर हैं। अच्छा नाम कमा चुके हैं। वह सब समझते हैं। बेटी प्रीति शादी कर के पति के साथ आसाम रहती है। सावित्री ही बेटे की चिंता करती है।

कहानी का दूसरा पात्र राजन यह एक जिम्मेदार लड़का है। बीस साल से अमरिका रहने के बाद भी अपनी जड़े नहीं भूलता। माँ-पिताजी का खयाल रखता है। उन्हें मिलने आता है।

इसी तरह एक माँ अपने विदेश गए बेटे के लिए चिंतित है। सावित्री कहती भी है कि - अब तुम यहाँ नौकरी के लिए कोशिश करो। यहाँ नहीं मिली तो तुम अपना खुद निर्णय लो। हम सिर्फ कहेंगे तो कि तुमने कोशिश तो की थी। कहीं बेटा अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज छोड़ दे इसका डर माँ हमेशा महसूस करती है।

2.1.8 'शेष होता साम्राज्य' -

इस कहानी में एक पीढ़ी बाद की बदली गंवई मानसिकता एवं स्वार्थपने की ओर भी खूबसूरती से संकेत किया गया है। जहाँ इस कहानी में बूढ़ी औरत तुलसी का दूसरे शहर से अपने गाँव के प्रति मोह को रेखांकित किया गया है।

कहानी का मुख्य पात्र बूढ़ी तुलसी अपने बेटों के साथ शहर में रहती है। बेटे शहर में ही नौकरी करते हैं। उसी के साथ तुलसी रहती है, लेकिन वहाँ तुलसी का दिल नहीं लगता। तुलसी पाँच-एक वर्ष एक ही जगह बँधकर रहने के कारण उसका मन अपने गाँव के घरौंदे की ओर उड़ जाने को मचलता है। बहु-बेटे उन्हें कहते भी हैं कि -

''माँ ! अब तुम लोगों की उम्र नहीं है अकेले घूमने-फिरने की। पिताजी भी स्वस्थ नहीं हैं। वहाँ तुम्हें दस चीजों की दरकार पड़ेगी। कौन आड़े वक्त काम आएगा ?''[4] लेकिन तुलसी मानती नहीं। एक दिन लालजी का पत्र आता है। घर टूट रहा है, घर के छत निकम्मे हुए हैं। तब तुलसी गाँव जाना पसंद करती है और गाँव आकर घर की मरम्मत करती है। तुलसी बेटों को कहती है कि वहाँ सब मेरे सग्गे संबंधी हैं, रिश्तेदार हैं, सब आपसवाले हैं, चिंता करने की कोई जरूरत नहीं।

तुलसी जिस दिन गाँव जाती है तब उसका पहले जैसा सम्मान नहीं होता। तुलसी नाराज होती है। कमला चाची भी तुलसी को कहती है कि अब बच्चे बड़े हुए हैं, तो कोई अपना नहीं सुनता। तुलसी को भी लगता है कि अब बेटों ने घर आना चाहिए।

ऐसे ही एक दिन तुलसी अँधेरी कमरे में ही बैठती है। लालजी आता है। बत्ती जलाता है और कहता है अँधेरे में क्यों बैठी मौसी। तुलसी इशारे से ही उसे बत्ती जलाकर अपने पास बुलाती है। तुलसी उस दिन बहुत कमजोर दिखाई देती है। लालजी को बुलाकर चारपाई के नीचे का बक्सा खोलकर एक-एक कर वस्त्र-बर्तन-भाँड़े आदि सामग्री निकाल-निकालकर दिखाती है। बक्से में राम-नाम के पट्टे में रखी सामग्री दिखाती है। तुलसी अपने बेटें को भी सामान के बारे में नहीं कहती सिर्फ लालजी को ही दिखाती है। और कहती है कि जो सच है, उसे स्वीकार करना पड़ता है, पका हुआ फल पेड़ से कब टपक पड़े कोई भरोसा है। उस वक्त कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। तुलसी अपनी अंतिम साँस भी गाँव में लेना चाहती है।

आलोच्य कहानी में अपने गाँव के प्रति श्रद्धा रखनेवाली तुलसी का चित्रण किया है।

2.1.9 'बात ही कुछ और' -

इस कहानी में दिखावटी या परिवर्तित प्रेम का चित्रण किया है। कहानी की नायिका सुहानी के पिताजी कुमार साहब अच्छे परिवार के हैं। कुमार साहब के परिवार में पत्नी, दो बच्चे हैं। कुमार साहब खाते-पीते और खिलानेवालों में से हैं। रूपयों-पैसों की कोई कमी नहीं है। लेकिन उन्हें बेटी के वास्ते बहुत परेशानी या मानसिक पश्चाताप होता है।

कुमार साहब का बेटा संदीप शिकागो युनिवर्सिटी से एम्. डी. होने के बाद वहीं डाक्टर की नौकरी करता है। बेटी इंजीनियरिंग में पढ़ती है। बेटा अमरिका में रहकर वहीं अमरिकन टेसी नामक लड़की से शादी करता है और पिताजी से पत्र भेजकर बताता है। पिताजी बहू को लेकर आने के लिए कहते हैं। बेटा और बहू घर आते ही माँ को यह रिश्ता पसंद नहीं है। टेसी यह आधुनिक परिवेश में स्वतंत्रा से जीनेवाली लड़की है। वह अपने सास-ससूर के सामने आधे कपड़ों पर ही बैठती है। माँ को

यह पसंद नहीं आता लेकिन पिताजी समझते हैं। चलो अच्छा हुआ बेटा तो खुश है फिर और क्या चाहिए ? बेटी सुहानी इंजीनियर में पढ़ रही है। कुमार साहब अपनी लड़की को समझ नहीं पाते।

सुहानी शहर में अकेली रहती है। तब से वह अपनी कहने और दूसरों की सुनने की आदत धीरे-धीरे भूलती है। वह नए मित्र, नई स्थितियों और नए अनुभवों से माँ और पिताजी से दूर जाती है। इसके कारण अनेक थे। लेकिन सबसे बड़ा कारण जतीन था।

उसका सहपाठी, कहानी का कथानायक जतीन इंजीनियर कम और पहुँचा हुआ दार्शनिक फकीर जादा लगता है। यह सुहानी को काफी बाद में मालूम पड़ता है। शुरूआत दोनों ने नए अनुभवों से की थी। कम-से-कम सुहानी का तो पहले कोई ठोस अनुभव नहीं था।

सुहानी जतीन की सहपाठी होने के कारण बहुत निकट आती है। दोनों एक कमरा लेकर एक-दूसरे को समझने की कोशिश करते हैं। इस अकेलेपन के संसार का सुहानी को जतीन ही साझीदार नजर आया, जो साथ रहकर भी हमेशा अलग-अलग ही रहा।

जतीन इंजीनियर की नौकरी करता है लेकिन दो-चार मास से जादा किसी भी संस्थान में नहीं टिकता। दो-तीन साल बीत जाने के बाद सुहानी जतीन से शादी करने के लिए पूछती है। रजिस्टर पढ़ हस्ताक्षर करके वे साथ रहने का अनुबंध स्वीकार करें तो उसमें हर्ज ही क्या है, ऐसा कहती है।

जतीन सुहानी से शादी करने के लिए नकार देता है और अमरिका जाने के लिए पासपोर्ट बनवाता है। अमेरिका जाने से पहले सुहानी को मिलकर कुछ बातें करता है। तब सुहानी कहती है हम शादी करके चले जाएँगे। तो जतीन उसे कहता है, ''हमारे बीच अच्छा-बूरा मानने का सवाल ही कहाँ उठता है सु, जतीन समझौते के स्वर में बोलता है और कहता है कि - ''हमारे बीच में जो भी है, साझा है, सुख:दुख सही गलत बस। एक बात जरूर है कि मैं अभी कोई फैसला नहीं करना चाहता, शादी नाम से बँधने की गंध आती है। मुझे लगता है, शादी आदमी का, उसकी महत्त्वाकांक्षाओं का अंत है।''[5] जतीन शादी नहीं करता। अंत में सुहानी नाराज होकर अपने माँ और पिताजी को पत्र लिखकर शादी का निर्णय उन्हीं पर छोड़ देती है।

2.1.10 'देश काल' -

कहानी का नायक मदन एक मध्य वर्गीय परिवार का लड़का है। पढ़ाई खत्म होने के बाद वह फिलेडेलफिला में जाता है। वहाँ रहकर वह कुछ दिनों बाद घर आता है और शादी करके पत्नी के साथ फिर वापस जाता है। वापस जाने के बाद वह आर्थिक स्थिति से तंग होता है। मदन स्वभाव से बहुत गरीब है, स्वाभिमानी है। पत्नी मदन को गाँव से कुछ पैसे मँगवाने के लिए मजबूर करती है। लेकिन वह पैसे नहीं मँगवाता। मदन हर वक्त काम में रहता है। सही निर्णय लेने की उस में क्षमता है। फिर भी उसके सामने अनेक पारिवारिक समस्याएँ आती हैं।

मदन को वहाँ अनेक मित्र मिलते हैं। मित्र उसे आड़े वक्त मदद भी करते हैं। वह धीरे-धीरे बहुत कमाता है। बँगला, कार आदि सब चीजें घर में हैं लेकिन वह खुश नहीं है। वह बेटी के कारण नाराज है। क्योंकि बेटी बड़ी हुई है। वह उसे अपने देश भारत में भेजना चाहता है। लेकिन पत्नी बेटी को दूर भेजना नहीं चाहती। पति-पत्नी में अनेक बार संघर्ष होता है। फिर भी वह इंकार करती है।

कहानी का दूसरा पात्र सोमी है। वह एक ईमानदार लड़का है। उसे मित्र विदेश आने के लिए कहते हैं लेकिन वह अपने माँ-पिताजी के कारण विदेश नहीं जाता। बूढ़े माँ-पिताजी अपनी जमीन से उखाड़ना पसंद नहीं करते। इसके साथ सोमी अपने बहनों के लिए भी चिंताग्रस्त होता है। बहुत सोच-विचार करके भी वह निर्णय नहीं ले पाता।

कहानी का नायक मदन भी अपने माँ और पिताजी की समस्या से चिंतित है और पोलिओ ग्रस्त बहन से भी। वह जब भी घर आता तब बहन के टाँग के लिए क्लिपर और माँ के लिए स्पाइनल बेल्ट लाना नहीं भूलता। मदन सब कुछ होने के बाद बूढ़ापे में अपने देश में ही रहना पसंद करता है। लेकिन पत्नी राजी नहीं होती। तब मदन कहता है कि, ''मैं वहाँ मरना नहीं चाहता।''[6]

इस कहानी में दूर देश फिलेडेलफिला में बसे अनिवासी भारतीय मदन के अपने देश के प्रति लगाव को दर्शाया गया है। मदन सारी आधुनिकता एवं जीवन भर देश की विकासशीलता और पिछड़ेपन को कोसने के बावजूद भी अंत में बूढ़ापा देश में ही गुजारने और अपनी मातृ भूमि पर ही प्राण छोड़ने की इच्छा रखता है।

2.1.11 'सच और सच का फासला' -

कहानी में दहेज की विकराल समस्या का चित्रण किया है। कहानी का प्रमुख पात्र श्रीधर मल्ला अपनी पत्नी, दो बच्चे और चार बहनों के साथ रहता है। चार बहनों में से एक की शादी हो गई है और तीन कुँवारी हैं। एक तो प्रायमरी स्कूल में अध्यापक है। मुहल्लेवाले उसे जवान बूढ़िया कहते हैं। शादी की उम्र अरसा हुए लाँघ चुकी है। तीसरी शादी के इंतजार में बैठी रही है। बड़ी ने तो शादी की उम्मीदें छोड़ दी है। स्कूल आना-जाना ही जैसे उसकी जिंदगी का एक मात्र ध्येय रहा है।

कहानी की नायिका प्रेमा ही सभी बहनों से अलग है। हर वक्त वह खुश रहती है। पुरूषों के साथ बोलना, हँसना यह उसकी विशेषता है। इसी कारण उसके भाई दसवी के बाद उसे घर में बैठने की हिदायत देते हैं।

श्रीधर मल्ला हर समय परेशान रहते हैं और ऊपरवाले को कोसते हैं कि गरीब के घर में प्रेमा जैसी रूप और स्वभाववाली लड़की को जन्म देकर उन्होंने श्रीधर मल्ला की नीदें हराम ही नहीं की बल्कि उसके सात पूश्तों का बेड़ा भी गर्क कर दिया।

प्रेमा की तीसरीवाली बहन अभी तक कुँवारी है। शादी न होने के कारण वह नाराज है। उसकी नाराजगी का प्रमुख कारण प्रेमा ही है क्योंकि जब भी उसे लड़केवाले देखने आते हैं तो प्रेमा को पसंद करते हैं। इसीलिए वह आत्महत्या करने तक की सोचती है।

प्रेमा सुंदर होने के कारण उसके रिश्ते की चाची उसे पसंद करती है। चाची का बेटा निकी भी प्रेमा से प्यार करता है। लेकिन चाची दहेज की लालच में अपने बेटे का विवाह किसी चीफ इंजीनियर लालजी साहब के बेटी से तय करती है।

इससे प्रेमा नाराज होती है और अपने बहन की शादी उसके कारण नहीं होती यह जब उसे मालूम होता है तब वह अपनी बहन श्यामा के रास्ते से हटने के लिए अपने खानदान को बट्टा लगाकर एक विजातिय युवक काका नामक लड़के के साथ भाग जाती है।

इससे घर के सदस्य उतने नहीं दुःखी होते जितना कि श्यामा होती है। पर श्यामा का रूदन खुशी का भी हो सकता है कि प्रेमा अब उसके रास्ते से हट गई है। यही वास्तविक दुःख और खुशी के बीच के सच का फासला है। इन दोनों बातों में न जाने सच क्या है ?

यह कहानी पारिवारिक, दहेज, प्रेम की समस्या पर आधारित कहानी है।

2.1.12 'चुनमुन चिरैया' -

यह कहानी बच्चों के मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कहानी का नायक सिद्धार्थ हवाई जहाज पर नौकरी करता है। उसका एक बच्चा है। उसका नाम चुनमुन है। सिद्धार्थ बच्चे को अपने साथ लेकर जाना चाहता है। लेकिन जहाज पर बच्चे को रखने की इजाजत नहीं है। इसी लिए वह अपने डेढ़ साल के बेटे चुनमुन को अपने घर दादी-दादा और नानी उमा के पास ही रखता है।

सिद्धार्थ और उसकी पत्नी सुनीता चुनमुन के याद में खोए से रहते हैं। सिद्धार्थ जब भी घर आता है तब खिलौने लेकर आता है जो कि जिससे बेटे का मन बहलाए। लेकिन चुनमुन माँ-पिता के बगैर नहीं रहता। सुनीता के दादा और दादाजी भी चुनमुन का बहुत खयाल रखते हैं।

कहानी का दूसरा पात्र कप्तान की पत्नी चेरी भी अपने बेटों के याद में तरसती है। चेरी के बेटे दूर अपने गाँव में रहते हैं। एक बेटा बड़ा हुआ है वह जर्मनी में इंजीनियर है। बहुत दिनों से बेटे का पत्र नहीं आता। इसी कारण चेरी नाराज है।

सिद्धार्थ और सुनीता भी अपने बेटे के लिए तरसते हैं। एक दिन चुनमुन अलबम (फोटो का) निकाल कर देखता है और पिताजी एवं मम्मी की तस्वीरों को चूमता है। बड़ी दादी घर के सब सदस्यों को सख्त हिदायत देती है कि - ''न, बच्चे को घड़ी-घड़ी माँ की याद मत दिलाओ। बेचारा चार दिन में सुखकर काँटा हो जाएगा। उसे दूसरे खेलों से बहलाओ। भूल जाएगा थोड़े दिनों में।''[7]

एक दिन चुनमुन गुम-सूम रहता है। किसी से भी बात नहीं करता। खेलने नहीं जाता। नानी उमा सभी तरह समझाने की कोशिश करती हैं। लेकिन वह नहीं मानता।

'चुनमुन चिरैया' बच्चों के मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। माँ सुनीता अपने डेढ़ साल के बेटे चुनमुन को नानी उमा के पास छोड़कर दो माह के लिए समुद्री जहाज पर काम करनेवाले अपने पति कप्तान सिद्धार्थ के पास चली जाती है। नानी और अन्य लोगों को विश्वास था कि माँ और पिताजी को भूलकर अपने साथ रहेगा। किंतु चुनमुन किसी भुलावे में नहीं आता और माँ सुनीता और पिताजी सिद्धार्थ को याद करता है और दु:खी होकर सिसकियाँ भरता किसी तरह से सो जाता है।

आलोच्य कहानी में बच्चे के मनोविज्ञान का चित्रण किया है।

2.1.13 'एक लड़की शिल्पी' -

यह प्रेम कहानी है। इस कहानी में दिखावटी प्रेम का चित्रण किया है। कहानी की नायिका शिल्पी दिखावटी प्रेम से धोखा खा जाती है। शिल्पी के पिताजी श्री सराफ एक अच्छे खानदान के हैं। श्रीमती सराफ भी कहती है कि शिल्पी मेरी बेटी नहीं, बेटा है। श्रीमती सराफ को पाँच बेटियाँ हैं। चारों बेटियाँ बी. ए., एम्. ए. करके अपने-अपने मुकामों यानी ससुरालों में पहुँच गई हैं।

शिल्पी महत्वकांक्षी लड़की है। इंजीनियर बनना चाहती है। शादी का नाम भी नहीं लेती। लेकिन जब वह पढ़ने जाती है तो धीरे-धीरे बदल जाती है। पहले-पहले तो बिल्कुल पता नहीं चलता।

कहानी का दूसरा पात्र अमित कहानी का नायक है। अमित शिल्पी का सहपाठी है और दिखने में अच्छा लड़का है। ट्रेनिंग के दूसरे साल से ही अमित कुमार लाइब्रेरी, कैंटीन वगैरह में उसके साथ जादा वक्त बीताने लगता है। उसी दिन अमित शिल्पी के काम में हाथ बंटाता है और पास आकर कानों में गीत गाने लगता है। वह शिल्पी के कानों को चूमता है। धीरे-धीरे वह दोनों इतने पास आते हैं कि वह एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। अमित भी उसे प्यार के बारे में कहता है कि, "मेरे तुम्हारे बीच पारे की तरह बहता यह प्यार का उन्माद.... इसे कोई नाम न देना.... यह तुम्हारे लिए है। सिर्फ तुम्हारे लिए... आश्चर्य।"[8]

शिल्पी इस मकड़ी के जाले में कैसे फँस गई उसे खुद को भी मालूम नहीं होता। शायद उन्हीं दिनों शिल्पी के मौसा का तबादला उसी शहर में हो जाता है। वह छुट्टी के दिन मौसी के हाथ का खाना खाने जाती है। अमित उसे मौसी के घर छोड़ने जाता है और घंटा दो घंटा अपने किसी अंकल के घर बीता कर वहीं से फोन करके वापस लेने आता है। बाद में धीरे-धीरे वह मौसी के यहाँ जाना बंद करती है। अमित के साथ होटल में जाती है।

शिल्पी धीरे-धीरे शादी के बारे में सोचती है और अपने पिताजी के पत्र लिखकर बुलाती है। पिताजी भी अमित से मिलकर शादी के बारे में पूछते हैं लेकिन अमित उत्तर नहीं दे सकता। शिल्पी

अमित से शादी करके रहेगी ऐसा कहती है लेकिन अमित तैयार नहीं होता। अमित शिल्पी से दूर जाता है। शिल्पी अकेलापन महसूस करती है। एक दिन शिल्पी की सहेली मणिका शिल्पी से कहती है कि अमित किसी सुलक्षणा राव नामक लड़की से शादी कर रहा है। शिल्पी उसे मिलकर कहती है कि प्लीज मेरी जिंदगी से निकल जाओ। यही शिल्पी आखरी वाक्य कहती है और अपना निर्णय खुद लेती है। शिल्पी किसी वसंत नामक युवक के साथ शादी करती है, जो वह उससे दो साल से सीनियर है। शिल्पी शादी करके अपने पिताजी और माँ को बताती है। पिताजी और माँ उसके निर्णय से खुश होते हैं।

आज की नारी अपना निर्णय खुद नहीं ले पा रही है और धोखा खा रही है। आलोच्य कहानी में दिखावटी प्रेम का चित्रण किया है।

2.1.14 'इंतजार बरकरार' -

यह कहानी मृत्युशय्या पर पड़े उन बीमार मरीजों की मानसिकता को उजागर करनेवाली कहानी है। कहानी का नायक खन्ना कैंसरग्रस्त है। कहानी का दूसरा पात्र नाथ जी भी एक दिन घर के छत पर से कुछ सामान निकालते समय सीढ़ी पर से नीचे गिरता है और उसकी कमर के नीचे की हड्डीयाँ टूटती हैं। उसे अस्पताल में भरती किया जाता है।

इस कहानी में अस्पताल में कैंसर और हास्य-रोग जैसी असाध्य बीमारियों से ग्रस्त बहुत मरीज हैं। फिर भी वह मृत्यु के सच को जानने के बावजूद उसे झूठलाने और नकारने के एकाकी ऊहापोह में जीते रहते हैं। सब कहानियों से अलग यह कहानी 'मैं' शैली में लिखी गई है। नायक 'मैं' खन्ना कैंसरग्रस्त है और किसी संपादकीय दफ्तर में संयुक्त संपादक पद पर कार्यरत है।

कहानी में कार्यालयीन उठक-पटक, जोड़-तोड़ और जी-हुजूरी का बखूबी चित्रण करने के साथ बीच-बीच में बहसों के माध्यम से रोजमर्रा के जीवन में आनेवाली जन-समस्याओं की ओर भी इशारा किया गया है। प्रकाशकों के टालमटोल और उनके घाघपन को चित्रित करने के लिए रामलाल नामक चरित्र का सृजन किया गया है।

अस्पताल में रोजमर्रा कितने बीमारियों से त्रस्त लोग आते हैं। अलग-अलग रोगों से पीड़ित लोग तरसते हैं और उनके रिश्तेदार, दोस्त, पड़ोसी खैर ख्वाह हाल पूछने, बिगड़ता हुलिया

देखने आते हैं। उसी तरह खन्ना के भाई और भाभी भी बहुत दिनों के बाद उन्हें मिलने आते हैं और हाल पूछ कर चले जाते हैं। अस्पताल में दूसरे मरिजों की हाँ, ऊँह देखकर नाथजी भी बहुत हैरान होते हैं। मरिजों की देखभाल पूछने आए लोग भी और मरीज भी फजुल बातें करते हैं।

2.1.15 'जंगली जलेबी' -

यह कहानी देहात से आए शोषित-गरीब गणेशी की गरीबी और उसकी नवयौवना पत्नी लक्ष्मी की दैहिक व्यापार करने की मजबूरियों और तथाकित संभ्रात शहरी समाज की विसंगतियों को उजागर करनेवाली कहानी है।

कहानी का नायक गणेशी शादी करने के बाद अपने पत्नी के साथ काम करने शहर आता है। शहर में आकर ज्योतिशर्मा के घर में रहता है। गणेशी किसी दफ्तर में काम करता है। गणेशी का गाँव छोड़ने का और एक कारण है कि वह साहूकार से कुछ पैसे ब्याज से लेता है। वह जल्दी वापस नहीं दे पाता। इसी कारण साहूकर उसे तंग करता है और उस पर अत्याचार करता है।

गणेशी की पत्नी बहुत अल्लड़ किस्म की लड़की है। वह घर के सामने जो पेड़ है, वहाँ जाकर पेड़-से फल तोड़ती है, खाती है। रास्ते पर से जानेवाले लोगों को इशारे करती है, कुछ भी बोलती है। यह उसकी मालकिन ज्योतिशर्मा को पसंद नहीं है। ज्योतिशर्मा एक-दो बार गणेशी को कहती है। गणेशी लक्ष्मी को मार-पीट करता है। वह लक्ष्मी को समझाता है। लेकिन लक्ष्मी नहीं सुधरती। लक्ष्मी की एक दिन एक गाँववालों से मुलाकात होती है। वहीं से उसके सुखी संसार में आग फैलने लगती है। वह आदमी हर-रोज दोपहर लक्ष्मी के पास आता है। वह उसी के साथ शरीर-संबंध रखता है। जब यह ज्योति शर्मा देखती है तो लक्ष्मी से कहती है कि, "उसे कह दो, सुबह-श्याम कभी आया करे। इस तरह अकेली औरत के पास रोज-रोज ड्यूटी बजाना ठीक नहीं लगता। पूरा मुहल्ला देखता है। साहब सुनेंगे तो गुस्सा करेंगे शरीफ लोग रहते हैं .... इधर।"[9]

कुछ दिन लक्ष्मी चुप-चाप रहती है। लेकिन फिर धीरे-धीरे वह बाबा के साथ घर में सोती है। ज्योतिशर्मा गणेशी को बताती है। गणेशी लक्ष्मी को मार-पीट करता है। तब लक्ष्मी चिल्ला-चिल्लाकर बोलती है कि हाँ हम करते हैं गंदा काम। सभीच करते हैं। हम पेट के वास्ते करते

हैं। बड़े लोग मौज मस्ती के वास्ते करते हैं। मुहल्ले के सभी लोग अपने-अपने घरों की खिड़कियाँ बंद करते हैं। गणेशी लक्ष्मी के मुँह पर हाथ रखकर आवाज दबाता है। वह चुप नहीं बैठती।

इस कहानी में गरीब स्त्रियों को पेट की आग बूझाने के लिए अपना शरीर बेचना पड़ता है। इसका यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

2.1.16 ***'प्यारिया तो बौरा गया'*** -

कहानी में एक निम्न मध्य वर्गीय परिवार के मुखिया, क्लर्क-पद पर कार्यरत प्यारेजी के जीवट स्वभाव, संघर्ष एवं जुझारूपन तथा अंततः धैर्य एवं साहस खोकर विक्षिप्त-सा हो उठने का दृश्य खींचा गया है।

कहानी का नायक प्यारेजी एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार का जिम्मेदार लड़का है। बचपन में ही पिताजी की मृत्यु होने के कारण परिवार की जिम्मेदारी उस पर आती है। प्यारे जी के मामाजी उसे किसी ऑफिस में क्लर्क की नौकरी लगवाते हैं। महिने में पाँच सौ रूपये में घर का खर्च पूरा नहीं होता। फिर भी वह करता है। प्यारिया के घर में आठ सदस्य हैं। इतना बड़ा परिवार वह अकेला कमाकर चलाता है।

जब प्यारिया छोटा था तब उनकी माँ अमरावती ब्राह्मण की बहू होकर भी बर्तन माँज कर और दान माँगकर घर चलाती है। लेकिन जब प्यारिया बड़ा होता है तब माँ को काम करने नहीं देता और कहता है कि - ''मैं काम करूँगा माँ, पढ़ाई छोटा किशन करेगा। तू चिंता मत कर। हम सब जिएँगे।''[10]

माँ अब हर वक्त बीमार रहती है। प्यारिया अकेला ही काम करता है और रात घर आकर ट्यूशन लेता है और अपनी सब बहनों की शादी कर देता है। प्यारिया के मामाजी किसी जंगली लड़की शुमी के साथ प्यारिया की शादी कर देते हैं। दूसरी एक बहन पति के छोड़ देने के बाद प्यारिया के पास आती है। बहन और उसके दो बच्चों को भी वह सँभालता है।

प्यारिया को रहने के लिए ठीक तरह से घर भी नहीं है। बारीश के समय घर में पानी होता है। सब घर गीला हो जाता है। घर का छत जर्जर होता है। उसे ठीक करने के लिए चाचा से कहता है लेकिन चाचा ठीक करके देने के बदले ऊपर का एक कमरा माँगते हैं। प्यारिया नाराज होता है।

एक दिन प्यारिया रात मे बूरा सपना देखता है। घर का छत गिर पड़ा है। उसमें घर के नौ लोगों की लाशें पड़ी हैं। लेकिन सुबह उठकर देखता है तो सब लोग ठीक हैं। प्यारियाँ सुबह उठकर लकड़ी का भारी कुंदा दम-साधकर ठुलाने लगता है और छत की मरम्मत करने की कोशिश करता है। इस कहानी में गरीबी की समस्या से और मकानों की समस्या से त्रस्त प्यारियाँ का चित्रण किया है।

2.1.17 'नौवें दशक की दोस्ती' -

यह कहानी दोस्ती-संबंध एवं संबंधों की अर्थवत्ता पर रचित कहानी है। भरी-पूरी गृहस्थीवाली प्रौढ़ा मधुरिमा एवं एक नवयुवक सुरेश की प्रेममयी मनोदशा, फिर दोस्ती का रिश्ता कायम होना और नवयुवक दोस्त की धोखेबाजी विशेष रूप से मानसिक कमजोरियों को उजागर करने के लिए चित्रित की गई है।

कहानी की नायिका मधुरिमा एक भरे-पूरे परिवार में रहती है। घर में पति है, दो बच्चे हैं, जो होस्टल में रहते हैं। मधुरिमा के पति अपने ही काम में व्यस्त रहते हैं। मधुरिमा रेड़िओं पर प्रोग्राम करती है। वायलिन बजाती है। यह सब करते हुए भी वह अकेलापन महसूस करती है। मधुरिमा की उम्र करीब चालिस साल की हुई है। एक दिन अचानक वह सामनेवाले बँगले के बरामदे में देखती है। एक युवक उसे बड़े-बड़े आँखों से घूर-घूरकर देखता है। वह सुरेश है।

कहानी का नायक सुरेश एक कस्टम अधिकारी है। उसकी उम्र अठ्ठाईस साल की है। उसके घर में बच्चे हैं, माता-पिता हैं, भाई है। फिर भी वह मधुरिमा की ओर देखता है। मधुरिमा सोचने लगती है और मन-ही-मन में होगा कोई तो अपने को चाहनेवाला क्योंकि वह टी. वी. और रेड़िओ पर प्रोग्राम करती है। यही समझ लेती है।

कई दिनों तक सुरेश उसे देखता है। मधुरिमा धीरे-धीरे गुम-सूम बैठती है। उसके मन में एक अनोखी हलचल पैदा होती है। एक दिन मधुरिमा उसे पूछती है कि आप कौन हैं ? आप मुझे क्यों

देखते हैं ? लेकिन सुरेश कुछ नहीं कहता। मधुरिमा उसे फोन नंबर देती है और फोन करने को कहती है। सुरेश भी फोन पर बिना मतलब से पूछताछ करता है। कैसी हो ? मधुरिमा सुरेश से कुछ सवाल करती है। तब सुरेश उत्तर में सिर्फ मैं आपके साथ दोस्ती करना चाहता हूँ। ऐसा कहकर फोन रख देता है। मधुरिमा दोस्ती करने में क्या हर्ज है ऐसा सोचकर सुरेश से दोस्ती करती है।

कई दिनों तक मधुरिमा और सुरेश आपस में मिलते हैं, घूमने जाते हैं। लेकिन कुछ दिनों बाद सुरेश मधुरिमा को भूल जाता है। फोन करना बंद करता है। मधुरिमा धोखा खाकर नाराज होती है। सुरेश अब पिछले दरवाजों से काम पर जाता है। मधुरिमा दोस्ती के झुंठे वादों पर पछताती है और अकेलापन महसूस करती है। प्रस्तुत कहानी में नौवें दशक की दोस्ती, धोखेबाजी, या मानसिकता को उजागर किया है।

2.1.18 ***'पापा तो बस'*** -

यह कहानी एक नवयुवक रमाकांत की बेबसी, आर्थिक तंगी और समाज में तेजी से फैलती जा रही अविश्वास की भावना को व्यक्त करती है। कहानी का नायक रमाकांत तीन साल पहले बी. ए. कर चुका है। नौकरी की तलाश में भटकता फिरता है। रमाकांत प्राइवेट लॉ की पढ़ाई भी करता है और घर खर्चे के लिए कुछ लड़कों को पढ़ाता है। खर्चा तो थोड़ा चलता है पर तंगी बहुत है।

रमाकांत एक निम्न-मध्यवर्ग के सात प्राणियोंवाले परिवार का बड़ा लड़का है, जिसके पिता छः बच्चों और पत्नी को अनाथ बेसहारा कर गोलोकवासी होने का सुख प्राप्त कर चुके हैं। बेटे रमाकांत पर इहलोक की यातनाएँ और समस्याएँ लादकर।

रमाकांत एक दिन इंटरव्यू के लिए शहर में आता है। उसे सेकरिटेरियर में क्लर्क की नौकरी मिलती है। रमाकांत जब इंटरव्यू के लिए आता है तो अपने दोस्त के पास रहने की आशा से आता है। लेकिन दोस्त किसी काम से दूसरे शहर जाता है। तब रमाकांत को होटल में रहना पड़ता है और पैसा खर्च होता है। घर वापस जाने के लिए उसे पैसों की जरूरत पड़ती है। तब वह एक शरीफ मुहल्ले में जाता है। मिसेज डी. के. के यहाँ वह पैसे माँगने के लिए जाता है। लेकिन डी. के. नौकरों द्वारा उसे मार-पीट होती है। नौकर उसे चोर-डाकू, आतंकवादी समझकर घर से बाहर निकाल देते

हैं। रमाकांत हाथ जोड़कर कहता भी है कि, मैं एक जरूरतमंद युवक हूँ। मुझे थोड़े पैसों की जरूरत है। लेकिन नौकर उसकी एक नहीं सुनते।

कहानी का दूसरा पात्र दास बाबू है जो शरीफ आदमी है। नौकरी से रिटायर हो चुके हैं। बेटा शहर का बड़ा नामी डॉक्टर है। दास बाबू हर एक के आड़े वक्त काम आते हैं। यह उनके पत्नी और बेटे को पसंद नहीं है। जब रमाकांत को मार-पीट हो रही थी उसी समय दास बाबू वहाँ आते हैं और रमाकांत को घर लेकर जाते हैं। घर जाकर उसे खाना खिलाते हैं और अठ्ठाईस रुपये बीस आने देते हैं।

दास बाबू के घरवाले इस स्वभाव से परेशान रहते हैं। रमाकांत दास बाबू के पैर छुकर पापा फिर आऊँगा कहकर जाता है। रमाकांत फिर काफी दिनों बाद हाथ में लिफाफा लेकर दास बाबू के पास आकर लिफाफा हाथ में देता है। दास बाबू उन्हें गले लगाकर खुश होते हैं। इस कहानी में ऊँचे लोगों की अविश्वास की भावना पर तीखा व्यंग्य किया है।

2.1.19 'रामबिल्ले की दस्तक' -

यह कहानी एक वृद्धा की अपनी परंपरागत विरासत मन के रिश्ते और घर-गृहस्थी के लगाव की भावना पर आधारित है। कहानी का प्रमुख पात्र एक बूढ़ी औरत चाची है, जो शहर से काफी दिनों बाद अपनी बेटी के साथ गाँव आती है। वह अपने जीवन में घटी जायजों को दुबारा दोहराती है। चाची के साथ निकी उसकी बेटी आती है। निकी हमेशा अपनी चाची की सेवा करती है।

चाची हमेशा अपने पुराने घर की और गांव की तारीफ करती है। बचपन में हर एक का नाम निकालती है। जब बेटी उसे अपने साथ चलने को कहती है तो वह गाँव में ही रहना पसंद करती है। वह अपने बेटी के साथ नहीं जाती। इसी तरह इस कहानी में वृद्धा का चित्रण किया है। वृद्धा समझती है कि यह सच है कि जीवन अविश्वासी, गिरगिटी फितरस्तवाला है, लेकिन आज के जमाने में यही इसका सच बन गया है। फिर भी वह वृद्धा स्मृतियों की विरासत लेकर जीवन जीने लगती है। इस कहानी में एक वृद्धा की मानसिकता का चित्रण किया है।

2.1.20 *'अनार के फूल'* -

कहानी में नीरा और नसीर के आंतर्जातिय प्रेम-विवाह के माध्यम से जाति-संप्रदाय के विभेद को मिटाकर मनुष्य-मनुष्य के प्रेमभाव को प्रतिपादित किया है। साथ ही लेखिका ने नुरी पात्र के द्वारा परित्यक्ता नारी की वेदना को भी सशक्त स्वर दिया है।

कहानी की नायिका नीरा एक पढ़ी-लिखी लड़की है। वह नौकरी भी करती है। नीरा के पिताजी लड़की शादी के लिए आयी है यह समझकर वर देखने के लिए जाते हैं और अखबार में भी विज्ञापन देते हैं। नीरा को देखने बहुत लड़कों के पिता, भाई, नाते-रिश्तेदार आते हैं। कई लोग पत्रों से जानकारी देते हैं। लेकिन नीरा नसीर के साथ शादी करना चाहती है। कहानी का नायक नसीर है। वह नीरा से बहुत प्यार करता हैं। नसीर की माँ उसकी दूसरी ओर शादी करना चाहती है। लेकिन नसीर अपनी माँ को मनाता है।

नीरा के माँ-पिताजी नसीर मुसलमान है, इसी कारण शादी को तैयार नहीं होते। उन्हें समाज का डर है। समाज की रीति-रिवाजों का डर है। दूसरी ओर बहन जया का हाथ कौन थामेगा इसका डर है। फिर भी नीरा और नसीर काफी विरोध होने के बावजूद भी शादी करते हैं। नीरा नसीर के घर जाती है। जब दोनों की शादी होती है तब नीरा की सास नीरा को बहुत छलती है और कहती है कि - तुम्हें नीरा से नुरा बनना पड़ेगा। कुरआन शरीफ सीखना होगा, बुर्का न भी पहनो मगर मुँह उघाडकर पराए मर्दों से रू-ब-रू होना नहीं चलेगा। इसी तरह से कहकर वह हर समय नीरा को सताती है।

कहानी का दूसरा पात्र है नुरी। नुरी तलाक-शुदा औरत है। नुरी का मर्द बेवफा निकलता है। वह बूआ की लड़की के साथ शादी करता है। नुरी अपने दो बच्चे मदू और सूबू के साथ रहती है। नुरी हर समय काम में व्यस्त रहती है। काम करते समय सब साथियों के साथ अच्छा बर्ताव करती है। सबके साथ मिल-जुलकर काम करती है और बच्चे को पोसती है। नुरी का मन कभी-कभी गुम-सूम रहता है। नाराज होता है। तब वह अकेली ही गाना गाकर अपने मन को हलका-सा महसूस करती है।

चंद्रकांता ने नीरा और नसीर के माध्यम से जाति-सांप्रदाय को मिटाकर शादी करके जीवन जीनेवाले जीवों का चित्रण किया है और परित्यक्ता नारी नुरी की वेदना को उजागर किया है।

2.1.21 *'मुक्ति-प्रसंग'* -

कहानी में संवेदनशून्यता एवं औपचारिकता निभाने की ओर बढ़ती हुई शहरी एवं अफसरी मानसिकता का सुंदर हवाला दिया गया है । अफसर बेटे पिता के श्राद्ध-कर्म की औपचारिकता तो बड़े ताम-झाम से करते हैं किंतु संवेदना के स्तर पर उनका पिता से कोई विशेष लगाव नहीं है।

पिताजी की जब मृत्यु होती है तो सब बेटे आते हैं। जब तक पिताजी जिंदा थे तब तक पिताजी की कोई सेवा नहीं करते। सिर्फ छोटा बेटा पिताजी की सेवा करता है। सभी बेटे शहर में नौकरी करते हैं, अफसर हैं। सिर्फ छोटा बेटा पिताजी के पास था। सब बेटे पिताजी का श्राद्ध करने गंगा घाट पर आते हैं। उस में से एक बेटा अपने ज्युनियर अफसर शर्माजी और वर्माजी को उनकी सुविधा के लिए प्रबंध करने अपने साथ लाते हैं। पंड़े को बुलाकर श्राद्ध करते हैं। पंड़े श्लोकों विधियों के उच्चारण के साथ कार्य संपन्न करते हैं। बेटे श्राद्ध करने के लिए सब सामग्री पंड़े को देते हैं।

पंड़े भी इन अफसर बेटों से पिताजी का स्वर्गवास हुआ है, खूब दान-पुन्न करवाओ, उनकी आत्मा तृप्त होगी, इस तरह फुसलाकर दक्षिणा पाते हैं।

बेटे पिता के श्राद्ध-कार्य के अवसर पर दो-सौ जनों के लिए हलवा-पूरी, सब्जी आदि का प्रबंध करते हैं। वे आयोजन में कोई कसर नहीं रखना चाहते। उनकी भी अपने विशिष्ट समाज में साख थी। श्रद्धा, आस्था में कभी नहीं होनी चाहिए ऐसा समझते हैं। बेट पिताजी के श्राद्ध के अवसर पर उनकी आत्मा को शांति मिले। इस उद्देश्य से गरीब लोगों को दान करते हैं। बेटे समझते हैं कि दान-धर्म करना, गरीब लोगों को वस्त्र देना, यह पिताजी की आत्मा को शांति देना है।

इस कहानी में चंद्रकांताजी ने शहरी और अफसरी बेटे की मानसिकता का चित्रण किया है।

2.1.22 *'वितस्ता की जहर'* -

यह कहानी कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद की कहानी है। इस कहानी में विभिन्न प्रांतों के विभिन्न धार्मिक आस्थावाले जो परंपरागत निवासी हैं उनमें परस्पर कोई बैर-भाव नहीं है। उनके लिए

तो दिन-धर्म तो अपना-अपना पद प्यार मुहब्बत साझा है। वे एक-दूसरे के रक्षक हैं लेकिन चंद मुट्ठी भर बद्दिमाग लोगों ने उनमें भेद और आतंक फैला रखा है।

'वितस्ता की जहर' इस कहानी में भी आतंकवाद का डर हर एक के माथे पर है। कोई भी आदमी घर से बाहर नहीं निकलता। कहानी का नायक शेखर के घरवाले भी अपने घर से बाहर नहीं निकलते। बिना कारण ही आतंकवादी लोगों को मार डालते हैं। शेखर का एक मित्र कुछ गोलियाँ लाने जाता है। जब वह वापस घर आने लगता है तो उसे पीछे आतंकवादी गोली मारकर खत्म करते हैं। हर रोज कितनी ही घटनाएँ होती हैं।

कहानी का नायक शेखर घर में अकेला लड़का है। इसीलिए घरवाले घबराते हैं। ये जो आतंकवादी हैं वह पाकिस्तान में ट्रेंड फुसलाए गए गुमराह लोग हैं। ऐसा जो करते हैं वे सब गुंडे हैं। शेखर कहता है कि सरकार आतंकवादियों को पकड़ने के लिए घरों में छापे मारती हैं तो लोग हाय-तौबा मचाते हैं। ऐसे में कोई कुछ नहीं कर सकता। शेखर अपने घरवालों को दूसरे शहर भेजता है। उस समय शहर में कर्फ्यु लगाया गया था। लेकिन शेखर एक बंद ट्रक में घरवालों को दूसरे शहर भेज देता है।

हर समय मार-पीट, खून, लूट आदि का भय आदमी के मन में रहता है। इस कहानी में चंद्रकांता ने कश्मीर व्याप्त आतंकवाद का चित्रण किया है।

2.1.23 ***'चक्रव्यूह'*** -

यह इस कहानी संग्रह की अंतिम और अपेक्षाकृत लंबी कहानी है। पुत्र के विदेश प्रवास और फिर वहीं बस जाने की समस्या को लेखिका ने बार-बार कई कोनों से उठाया है। अपने बचपन, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था की स्मृतियों में खोती सुमन अपने पति के साथ सात-समंदर पार अमरिका में रह रहे अपने बेट मनु के पास जाती है। वहाँ मनु की अमेरिकन दोस्त जेनिस से उसके लगाव को जानकर सुमन को धक्का लगता है। माँ सुमन की इस बेरूखी को देखकर मनु अभिमन्यु की भ्रांति चक्रव्युह में फँस जाता है। क्योंकि विवाह के बाद भी जेनिस भारत में रहने को कतई तैयार नहीं है। उधर भारत में रहनेवाली माँ को अपँने बेटे का दूर हो जाना सहनीय नहीं है। क्योंकि इतने थोड़े से स्वार्थ

को सहनीय नहीं है। क्योंकि इतने थोड़े से स्वार्थ को वह रिश्ते की माँग समझती है। माँ और पिता के बारे में सोचकर मनु अभिमन्यु की तरह फँस जाता है। इसका चित्रण चंद्रकांता ने बड़ी बखूबी से किया है।

2.2 *'दहलीज पर न्याय' कहानी संग्रह -*

2.2.1 *'दहलीज पर न्याय' -*

प्रस्तुत कहानी-संग्रह की प्रथम कहानी 'दहलीज पर न्याय' है। प्रस्तुत कहानी में अंधविश्वास से खोखली व्यवस्था का चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका रूक्की एक मध्यवर्गीय परिवार में रहती है। वह और उसका पति दोनों रहते हैं। दोनों की शादी के पाँच साल बाद उन्हें लड़का होता है। घरवाले कहते हैं कि देवी माँ के दर्शन करके आए तब वह मंदिर में जाती है। वहाँ गाँव के महंत की उनके बेटे पर नजर जाती है और महंत कहता है देवी माँ ने तुम्हारे बेटे को बली देने के लिए कहा है। ''इसकी बलि देगी तो दस गबरू जनेगी, अभी तो तु जवान है। देवी माँ मेरे सपने में आयी थी।''[11]

रूक्की की देह, आत्मा तक कॉप उठती है। रूक्की को डाक्टरनी ने कहा था कि दूसरा बच्चा नहीं होगा। महंत बोलता है कि डाक्टरनी देवी से ज्यादा जानती है। बच्चे की उम्र एक माह, एक दिन लिख गई है धर्मराज के खाते में। देवी के नाम पर अपने बच्चे की बलि चढ़ेगा और वह अपनी आँखों से यह अत्याचार देख न पाएगा। इसलिए रूक्की का पति उसी दिन गाँव छोड़कर भाग जाता है।

रूक्की अकेली पड़ती है लेकिन अपनी जिद्द नहीं छोड़ती। रूक्की रात के सन्नाटे में कोई भी किसी की भी परवाह न करते हुए पुलिसथाना जाती है। लेकिन वहाँ भी पुलिसवाले उसका मजाक उड़ाते हैं। खुद पुलिस, हवलदार ही महंत की तारीफ करते हैं। बिना सबूत महंत पर इल्जाम लगाने का मतलब समझती हो ? इसी तरह जो आदमी की रक्षा करनेवाले हैं, वे रूक्की के साथ बद्तमिजी करते हैं।

वहीं से रूक्की चुप-चाप भाग जाती है। दूसरे गाँव सरदार अत्तरसिंह की कोठी में जाती है। सरदार का वहाँ बहुत बोलबाला है। कोई तो काम-काज मिलेगा इस आशा से रूक्की सरदार जी के घर जाती है। वहाँ रूक्की को काम मिलता है। बहुत दिनों तक रूक्की मिल-जुलकर काम

करती है। लेकिन एक दिन सरदारनी गाँव जाती है। तब सरदार जी अकेली रूक्की को देखकर राक्षस बनता है। रूक्की उसे चाचा नाम से पुकारती है फिर भी सरदार साहब अपना ईमान भूलता है। रूक्की अत्तर सिंह को मारना चाहती है। लेकिन अपने बच्चे के कारण वह सरदार को छोड़ देती है, क्योंकि अगर सरदार को मार दिया तो उसे फाँसी लगेगी और बच्चे को कौन संभालेगा ? इस डर से वह सरदार अत्तरसिंह को जीवन-दान देती है।

इस कहानी में बेबस औरत को समाज किस तरह सताता है, उस पर अत्याचार करता है। इसका चित्रण किया है।

2.2.2 'हत्यारा' -

कहानी में चंद्रकांता ने अलग किस्म के लोगों का चित्रण किया है। कहानी का नायक वीरसिंह अपने बुढ़े बाबा के साथ रहता है। वह एक गरीब परिवार में अपनी पत्नी, दो बच्चों के साथ रहता है। लेकिन उसके दोनों बच्चों की हत्या होती है। तब वह क्रोधित होकर हर समय भाले, तलवार, छुरी, खंजर को धार लगाए रहता है। वह छुरी, खंजर से अपना अंगुठा काँप कर खून को हवा में छितरते ही अंगूठा मुँह में दबाकर कस लेता है। वह गाँव के हर बच्चे के हाथ में हत्यार देना चाहता है। सबको हत्यारा बनाना चाहता है।

कहानी का दूसरा पात्र नत्यासिंह धार्मिक यात्रा करके गाँव आता है। वह खुद को 'औतारी' कहकर गाँववालों को ठगाता है। घर आकर अपनी पत्नी को कहता है कि - ''मुरखा तेरे घर भगवान का 'औतार' आ गया है। धन्न भाग तेरे, पूजा अर्चना नहीं करेगी।''[12]

अपनी पत्नी को गाँव में परचार करने के लिए कहता है। एक दिन सभी गाँववाले नत्थासिंह का 'औतार' देखने इकट्ठा हो जाते हैं। नत्थासिंह दाढ़ी को निचोड़ता-सा वह होठों में कुछ बुद-बुदाने के बाद उसकी सेवा में खड़ी दो आकृतियाँ इशारा पाकर पास आ जाती हैं। एक पुरूष और एक स्त्री उसके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। नत्थासिंह कुछ धार्मिक बोल गाकर वही दो व्यक्ति को बच्चे को लाने के लिए इशारा करता है। नत्था बायां हाथ उठाकर भीड़ को शांत रहने का आदेश देता है और दोनों बच्चे को घुटनों के बीच दबाकर गर्दन काट देता है। खून के फव्वारे से नत्थासिंह का चेहरा

रंग जाता है। नत्थासिंह की आँखों में खून का रंग घुल जाता है। सब भीड़ शांत होकर देखती है। नत्थासिंह का मंत्र पढ़ते-पढ़ते गला सुख जाता है। सब लोग भी जै हो ओतार बाबा की जय हो। देर न करो। अपनी शक्ति का परदर्शन करो। जै हो महाराज ऐसा नारा लगाती है। उत्तेजित भीड़ काबू से बाहर जाती है। नत्थासिंह दोनों बच्चों को लेकर भीतरवाले कमरे में चला जाता है। लेकिन कुछ भी सफल नहीं होता।

वीरा के बाबा चिल्लाकर पकड़ो हत्यारे को कहकर रो पड़ते हैं। सुखी वीरा की पत्नी बच्चों को सीने में पकड़ कर उल्टी पड़ी थी। नत्था को पुलिस हथकड़ियों में जकड़कर जीप की तरफ खींच कर ले जाती है। कहानी में चंद्रकांता ने अंधविश्वास धार्मिकता, आदि के कारण मासूम बच्चों की जान जाती है इसका चित्रण किया है। एक गरीब वीरा को हत्यारा बनाती है। इसका चित्रण किया है। कहानी की भाषा शैली सरल व सुबोध है। दर्द भरे गीत भी इस कहानी में हैं।

2.2.3 'मोह' -

कहानी भारतीय ग्रामीण नारी की कहानी है, जो अपने गाँव से बहुत प्यार करती है। कहानी का प्रमुख पात्र गुणी है। गुणी एक ईमानदार औरत है। गुणी के तीन बेटे हैं - नंदु, शंभु और दिना। वह अलग-अलग शहर में बसे हुए हैं। नंदु विलायत में बसा हुआ है। दिना फौज में नौकरी करता है। शंभु पढ़-लिखकर शहर में नौकरी करता है।

गुणी को बेटे अपने साथ लेकर जाना चाहते हैं। लेकिन गुणी को अपना गाँव ही प्यारा लगता है क्योंकि वह गाँव में घर, खेती, एक गाय और बछड़ा संभालती है। गुणी अशिक्षित होने के कारण किसी का भी पत्र आए तो मास्टर जी से पढ़कर सुनती है और खुश होती है। गुणी घर आनेवाले हर व्यक्ति का सम्मान करती है। गुणी एक बार शहर जाती है। वहाँ की रहन-सहन, तौर-तरीके उसे पसंद नहीं आते। इसीलिए वह गाँव चली आती है और अपने बेटे को गाँव चलने कहती है। गाँव में घर और खेती है । माँ गुजर जाने के बाद वह देखेगा ऐसा कहती है तब बेटा कहता है, "पढ़-लिखकर मैं खेती करूँगा ? तेरा तो बुढ़ापे में दिमाग फिर गया है माँ !"[13] बेटे शहर में ही रहना पसंद करते हैं ।

गाँव आना नहीं चाहते। गुणी सब होते हुए भी अकेलापन महसुस करती है। अब गुणी थक चुकी है और हृदय की बीमारी की पीड़ा से ग्रस्त भी है।

कहानी की भाषा-शैली सरल है। प्रकृति-चित्रण भी सरस है। कहावतों और उक्तियों का समावेश यत्र-तत्र मिलता है। कहानी में गाँव के प्रति मोह रखनेवाली ग्रामीण नारी का चित्रण किया है।

2.2.4 'करीने के कायल' -

कहानी का नायक जुतशी है। जुतशी गाँव से शहर में नौकरी के लिए आता है। इसे नौकरी तो मिल जाती है। लेकिन मकान की समस्या उसके सामने आती है। काफी कोशिशों के बावजूद एक जगह उसे मकान मिलता है। लेकिन वहाँ हर रोज कुछ-ना-कुछ लफड़ा होता है। शहर में नौकरी करनेवालों को हर रोज किसी-न-किसी समस्या का सामना करना पड़ता है। सुबह घर से निकला हुआ आदमी रात को सही सलामत घर आने की आशंका रहती है। अगर वह श्याम को सही सलामत घर पहुँचे तो भगवान का शुक्र करना चाहिए।

दिल्ली जैसे महानगर में रोजाना कितने कत्ल, खून, मार-पीट होती है। हर रोज बस दुर्घटनाएँ, दंगा-फसाद होते हैं। एक दिन जुतशी खचाखच भरी बस में आता है। तब कोई पाकिट मार उसका बटुआ मारता है। लेकिन उसमें कुछ पैसे नहीं थे। जुतशी कहता है कि, "कोई कायदा कानून नहीं रहा इस देश में। भेड़-बकरियों की तरह ठूस देते हैं लोगों को।"[14]

जुतशी और उसकी पत्नी निशा सुखी दाम्पत्य हैं। फिर भी निशा मन-ही-मन में निराश है। जुतशी और निशा की शादी होकर पाँच साल हुए हैं, लेकिन अभी-तक बच्चा नहीं है। निशा बच्चा चाहती है। लेकिन जुतशी को बच्चों की जरूरत नहीं है। जुतशी बच्चा न हो इसी लिए पत्नी को गोलियाँ देता है।

निशा को देवर की शादी में हर औरत हर तरह के सवाल पूछते हैं और टोकती हैं। निशा बड़ों के सामने आँसू बहाने के सिवा कुछ नहीं कर सकती। निशा अपनी बहन से भी कहती है कि तुम्हारा

13768
A

भैया अभी बच्चा नहीं चाहते। इसी तरह पता नहीं कैसे उसके सहज दाम्पत्य जीवन में संशय और बद्मजगी का प्रवेश हो जाता है। दोनों में संघर्ष होने लगता है।

निशा धीरे-धीरे गोलियाँ खाना बंद कर देती है। जब एक दिन निशा की तबीयत खराब होती है तब वह जुतशी से कहती है कि मैंने गोलियाँ खाना बंद किया है। तब जुतशी बेचैन होता है। उसे चारों तरफ मोटे पेट और दुबली टाँगोवाले, कचरा कुंड़ी से पेपनी निकाल कर बजाते बच्चे दिखाई देते हैं। उसमें से अपने बच्चे को पहचानने की कोशिश करता है।

कहानी की भाषा शैली सरल व सुबोध है। कहानी में चंद्रकांता ने दाम्पत्य जीवन का और महानगर के त्रस्त जीवन का चित्रण किया है।

2.2.5 'एक अध्याय का अंत' -

यह कहानी बहुत छोटी कहानी है। कहानी में कहानी की नायिका सिर्फ प्रेम के बारे में अंत तक सोचती है। कहानी का नायक श्री देवदत्त माथुर है। वह 'भारत मशीन टुल्स' में असिस्टंट फोरमैन के पद पर काम करता है। देवदत्त माथुर हर वक्त अपने काम में व्यस्त रहता है। ऐसे में ही उसकी पहचान विभा शर्मा नामक युवती के साथ होती है। विभा शर्मा माथुर के प्यार में पागल होती है। वह देर तक उसकी राह देखती है। लेकिन देवदत्त माथुर काम में व्यस्त रहने के कारण उसे मिल नहीं सकता। वह बस-स्टाप पर देर तक राह देखकर चली जाती है।

इसी तरह कहानी के अंत तक दोनों मिल नहीं सकते। विवशतावश कहानी की नायिका सिर्फ सोच-विचार में डूबी रहती है। यह कहानी देवदत्त माथुर और विभा शर्मा के प्रेम संबंधों पर लिखी गई है।

2.2.6 'एक युद्ध और' -

यह कहानी एक पारिवारिक, कौटुंबिक कहानी है। कहानी की नायिका मेघा यह एक ऐसी नारी है जो अपने मायके वालों से स्नेह-संबंध रखना चाहती है। लेकिन उसकी भाभीयाँ उसे अपमानित करती हैं। मेघा अपने भाई की पुत्री मुन्नी की शादी के लिए मायके जाती है। सब रिश्तेदार वहाँ आते हैं। बहन, चाचा, बेटे आदि रिश्तेदार तो दो-चार दिन पहले ही आते हैं। मेघा घर आते ही

उसे घर में सूना-सूना लगता है। मेघा की माँ को गुजर कर दो-चार महिने भी नहीं हुए। चाचा गुम-सुम से एक तरफ बैठे थे। मेघा कहती है कि चाचा कहते थे कि, ''जवानी में पत्नी का महत्त्व आदमी महसूस करे-न-करे, बुढ़ापे में संगिनी का महत्त्व एकदम बढ़ जाता है।''[15]

पत्नी का देहांत होने के बाद चाचा अकेलापन महसूस करते हैं। उनका मन कहीं नहीं लगता। जब शादी का अवसर आता है तो बच्चे गाना गा कर नाचने लगते हैं। मेघा भी जी-तोड़ मेहनत करती है। भाभी चाबियाँ कमर में खोसे फिरकनी-सी घुमती है। सब ठिक-ठाक चलता है, तब अचानक भाभी किचन में बहनों से कहती है कि अतिथियों ने तो घर का हुलिया ही बिगाड़ दिया है। मेघा नाराज होती है फिर भी चुप बैठती है।

शादी होती है तब मेघा को माँ की याद आती है। जब वह रोने लगती है तब सब महिलाएँ इकट्ठा होकर उसे समझाती हैं। भैया देखकर मेघा पर गुस्सा करते हैं। तो कुछ महिलाएँ भैया को कहते हैं कि सुख के समय अपने सगे याद आते हैं। पुराने घाव ताजे हो जाते हैं, तब भैया कहता है कि, ''धाप-आव कुछ नहीं मौसी। किसी-किसी को तमाशा खड़ा करना अच्छा लगता है। घर में मेहमान हैं, क्या समझेंगे ? आखिर मेरी भी तो कोई इज्जत है।''[16]

मेघा नाराज होती है। भाई और भाभी को मेघा की नहीं बल्कि नंदी बहन, नन्नी मौसी आदि की भी जरूरत नहीं है। वे उन्हें बुलाकर अपमानित करते हैं। मेघा दूसरे दिन अपना सामान लेकर गाँव जाने स्टेशन पर आती है। भैया साथ में छोड़ने आता है। औपचारिकताओं की अदला-बदल होती है। मेघा गाड़ी आने के बाद गाड़ी में बैठकर सफर शुरू करती है। लेकिन उसके मन में एक युद्‌ध शुरू है। भीतर एक ऐसा युद्‌ध चल रहा था जिस पर उसका कोई अंकुश नहीं है। मेघा अपनी इस लड़ाई में टूटते भ्रमों और बचे-खूचे विश्वासों की लड़ाई में अकेली है। मेघा अपने-आप मन में पछताती है। इस कहानी में चंद्रकांता ने टूटते संबंधों का चित्रण किया है।

2.2.7 'बावजूद इसके' -

इस कहानी में असफल प्रेम का चित्रण किया है। कहानी का नायक शरद और नायिका नंदी एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। लेकिन बाद में शरद विलायत जाता है और नंदी किसी दूसरे के

साथ शादी करती है। दोनों एक-दूसरे से पहले वादा कर चुके थे कि शादी करेंगे। शरद और नंदी पहले हर-दिन मिलते थे। लेकिन दोनों की शादी नहीं हो सकती।

एक दिन अचानक शरद और नंदी की भेंट होती है। तब नंदी की पुरानी पहचान जी उठती है। नंदी खुशी से हैरान हो उठती है। शरद उसके अवचेतन में मौजूद था। शरद के लिए भी बीच वर्ष अस्तित्वहीन हो गए थे। नंदी शरद के दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर आत्मस्वीकार करती है। दोनों एक-दूसरे को देखकर खुश होते हैं, जब नंदी के आँखों में गीलापन तैर आता है तब शरद कहता है, "जो हो सकता था, हुआ नहीं, उस पर दुखी मत हो नंदी ! रोनेवाली लड़की बूढ़ी और बेबस नजर आती है। रोनेवाला हर दृश्य धुंधला दिखता है। आज हम सालों बाद मिले हैं, हंसो, धूप-सी उजली हंसी। जीने के लिए चीजों को सही रंगों में देखना जरूरी होता है। कल हम फिर चुप हो जाएँगे। मैं तुमसे हजारों मील दूर चला जाऊँगा। तुम भी अपनी स्वीकार की दुनिया में चक्कर घिन्न खाती फिरोगी। कुछ नहीं बदलेगा। तुम मानवी हो। मानवी ही रहोगी, देवी बनने का ढोंग मत करो।"[17]

थोड़ी देर बाद दोनों अलग होते हैं। घर आकर हलका-सा महसूस करते हैं। नंदी सोचने लगती है शायद शरद कब लौटकर आएगा। यह शायद वह भी बता न पाएगा। कहानी बहुत छोटी है। प्रेम में सफल न होते हुए भी उनके दिलों में जो प्रेम है उसका चित्रण किया है।

2.2.8 'फिलहाल' -

कहानी में संघर्षपूर्ण जीवन जीनेवाली युवती का चित्रण किया है। कहानी की नायिका आरती एक शिक्षिका, अध्यापिका है। आरती संयमी लड़की है। आरती का सुबह-सवेरे एक व्यस्त दिन का आरंभ होता है और रात थककर बिस्तर पर पड़ने के बाद भी उसे विश्राम नहीं मिलता।

आरती अपनी अंधी माँ और बीमार बहन के साथ रहती है। आरती पूरा दिन स्कूल की आठ से पाँच तक थकानेवाली नौकरी करके घर में आकर घर का सब काम करती है। कुछ दिन वह नौकरानी रखती है। लेकिन वह भी तीन लोगों के महीने भर का राशन पंद्रह दिन में समाप्त करती है। आरती को दो भाई हैं लेकिन वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहते हैं। बहन और माँ का सारा बोझ आरती पर ही छोड़ देते हैं। आरती के भाई सिर्फ दीपावली के दिन ही माँ और बहन को मिलने आते हैं।

एक साल दीपावली को माँ के लिए एक पुरानी साड़ी, आरती के लिए वाइल की सस्ती-सी साड़ी और छोटी बहन के लिए रिबन और चुड़ियाँ लेकर नीला भाभी आती है। आरती यह देखकर नाराज होती है और माँ के लिए खुद नई साड़ी देती है और राजन भैया का नाम कहती है। दूसरे साल पत्नी के मनाने से राजन दीपावली घर में ही मनाता है। वह माँ के पास नहीं आता।

आरती की उम्र तीस के ऊपर हो चुकी है। अभी तक उसकी शादी नहीं हुई। एक दिन आरती की पहचान जय से होती है। दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। शादी भी करना चाहते हैं। लेकिन आरती को अपनी माँ और बीमार बहन की चिंता है। वह जय से कहती है कि, मेरे साथ मेरी माँ है, बीमार बहन है। उन्हें किसके भरोसे छोड़ दूँ। जय उन्हें सोच-विचार करके बोल दो ऐसा कहता है। आरती अपने भैया और भाभी को सब बातें कहती है तब नीला भाभी और राजन तैयार नहीं होते। अंत में भैया और भाभी शादी की तिथि तय हो जाय तो हमें सूचित करें यह कहकर चले जाते हैं।

आरती की माँ खुश होती है। आरती जब जय के ऑफिस में फोन करती है तब पता चलता है कि जय का ट्रांसफर हो गया है और वह सदा के लिए नागपुर चला गया है। आरती नाराज होकर चुप बैठती है। लेकिन जब आरती के भैया और भाभी को यह पता चलता है कि आरती के शादी की तिथि रदद हुई है तो वह दोनों खुश होते हैं।

आरती अंत तक कुँवारी रहकर अपनी माँ और बीमार बहन की सेवा करती है। चंद्रकांता ने इस कहानी के माध्यम से संघर्षपूर्ण जीवन जीनेवाली युवती और उसके भाई और भाभी के स्वभाव का चित्रण किया है।

2.2.9 'अभी वे जिंदा है' -

यह कहानी सुंयक्त परिवार की कहानी है। कहानी का प्रमुख पात्र बूढ़ी नंदी है। नंदी बहन की उम्र लगभग सत्तर की हुई है। नंदी का स्वभाव पुराने परंपराओं और रिति-रिवाजों को साबित रखने के लिए मचलता है। नंदी बहन अपनी बहुओं को अपने हाथ में रखना चाहती है। उसने भी अपने सास के सामने कभी-भी मुँह नहीं ऊँचा किया था।

छोटी बहू जब घर में आती है तब-से नंदी बहन परेशान रहती है। छोटी बहू सास की एक नहीं सुनती। बड़े घर की बेटी है और बड़े बहु को भी फुसलाने लगती है। तब नंदी को अपना रोब कम होने का डर सालता है। नंदी हर वक्त बड़ी बहू मोनी और छोटी बहू की बातें सुनने का प्रयत्न करती है। लेकिन वे उसे ऐसा सुनने का कभी मौका ही नहीं देते।

बड़ी बहू छोटी बहू को कहती है कि, माँ जी को कड़ी सास बनने का सुख दे ही दिया तो क्या होता है। लेकिन छोटी बहू कहती है कि, यह बहू पर सास का अत्याचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहेगा क्या। इसी तरह छोटी बहू बड़ी को समझाती है। इसी कारण नंदी बहन परेशान रहती है। गाँव में नंदी बहन का शासन के बारे में बहुत नाम है। लोग-लुगाइयाँ माँ जी के अनुशासन की दाद देते हुए कहते हैं कि, "बहू-बेटों को हाथ में रखना तो एक नंदी बहन ही जानती है।"[18] बहन अपने घरवालों पर बहू-बेटों पर अनुशासन रखती है। लेकिन छोटी बहू सास का यह अनुशासन तोड़ देगी। इसी कारण बहन परेशान रहती है।

चंद्रकांता जी ने सास (नंदी) के मनोविज्ञान को उजागर किया है। कहानी में लोकोक्तियों और मुहावरों का अनोखा प्रयोग किया है। भाषा सरल एवं सुबोध है। माँ जी मृत्यु से पहले अपनी हार स्वीकार नहीं करना चाहती। इसका चित्रण कहानी में किया है।

2.2.10 'शिकायतें' -

इस कहानी में अस्पताल की दुरावस्था का चित्रण किया है। कहानी का नायक दिवान बीमार पड़ने के बाद उसे अस्पताल लाया जाता है। उसके पास पत्नी प्रभावती रहती है। अस्पताल में तो बहुत सुविधाएँ होती हैं। लेकिन यहाँ कोई किसी की परवाह नहीं करता। दिवान का बेटा परदेश से अपने पिता को देखने आता है और अपने साथ पत्नी लीना को भी लेकर आता है। जब वह दोनों अपनी बहन उमा के साथ अस्पताल में आते हैं तब अस्पताल की दुरावस्था देखकर बेचैने होते हैं।

एक दिन प्रभावती थकी-सी महसूस करती है तो बेटा पिताजी के पास अस्पताल रहने तैयार होता है। लेकिन पत्नी आड़े आती है। अस्पताल में सभी तरह के मरीज होते हैं। सब की ओर देखकर जित्तु सोचने लगता है। मरिजों की देखभाल अस्पताल की सिस्टर ठीक तरह से नहीं करते।

आया से लेकर सिस्टर, बड़े डाक्टरों तक का हड़ताल चल रहा है। स्टाफ की कमी है। कई दिक्कते हैं। इसी लिए मरीजों की कोई देखभाल नहीं करता।

घण्टे-दो-घण्टे मरीज गीले कपड़ों में रहते हैं। जित्तु यह देखकर नाराज होता है। उसे यह अच्छा नहीं लगता। तब वह वापस जाने के लिए तैयार होता है। तब बहन उमा उसे कहती है - ''यह अच्छा समाधान है, सभी समस्याओं का, देख न सको तो भाग जाओ।''[19] पिताजी का यह हाल जित्तु नहीं देख सकता। इसी लिए वह वापस जाने का सोचता है। जित्तु डॉक्टर से शिकायत करने पर भी डाक्टर उसे उत्तर देने में टाल-मटोल करते हैं। इसी तरह कहानी में अस्पताल की दुरावस्था व मरीजों की समस्याओं की शिकायतों का चित्रण किया है।

2.2.11 *'दुर्गी देखेगी छब्बीस जनवरी'* -

प्रजासत्ताक दिन देखने की उत्कंठ इच्छा रखनेवाली देहाती युवती का चित्रण इस कहानी में किया है। कहानी का नायक सोहना की पत्नी दुर्गी देहाती औरत है। दोनों मध्यवर्गीय दाम्पत्य हैं। दुर्गी अपने पति से झगड़ा करके छब्बीस जनवरी देखने की इच्छा रखती है। दुर्गी दूसरे दिन रात को जल्दी उठकर खाना और लड्डू तैयार करती है और अपना पति और एक बच्चे को लेकर छब्बीस जनवरी का कार्यक्रम देखने जाती है। सोहना एक बार देखकर आता है वहाँ बहुत भीड़ होती है इसी कारण वह पहले तैयार नहीं होता। लेकिन दुर्गी के सामने उसकी नहीं चलती। दोनों वहाँ पहुँच जाते हैं। भीड़ से जगह निकालकर आगे चलते हैं। मिग ट्वेंटी, आई, एन. एस्. विश्रांत पनडुब्बियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम देश-प्रदेश की झाँकियाँ, नृत्य, राष्ट्रीय एकता के गीत आदि सब देखते चलते हैं।

लेकिन थोड़ी देर बाद काफी सावधानी बरतने पर भी भीड़ में दुर्गी सुहाना से बिछड़ जाती है। सोहना दुर्गी-दुर्गी कहकर चिल्लाकर पुकारता है। आगे-पीछे मुड़कर उचक-उचककर दुर्गी को देखता है। लेकिन दुर्गी उसे कहीं दिखाई नहीं देती। इधर कितने 'परमवीर चक्र' दिए जा रहे हैं, घुड़स्वार रेजिमेंट जा रही है। लेकिन सोहना का उसी तरफ ध्यान नहीं है। उसे सिर्फ दुर्गी की चिंता लगी रहती है।

सोहना भीड़ में चार-जनों को कुचलकर चार कदम निकल कर आवाज लगाता है। लेकिन पुलिसवाले डंड़ा दिखाकर उसे चुप बैठने की धमकी देते हैं। सोहना को भीड़ में बहुत गालियाँ भी खानी पड़ती हैं। कई लोगों ने उसके पितरों का श्राद्‍ध किया, कईयों ने टारजन स्टाइल में घौल जमाए और कइयों ने पैंट-कमीज खींच-खींचकर ही गुस्सा निकाला। सोहना अनेक विचारों में पड़ता है कि दुर्गी किसी गुण्ड़े के हाथ में लगी क्या। आजकल कितनी घटनाएँ, वारदाते शहर में होती हैं। देखी, सुनी और अखबारों में पड़ी है। इसी विचार में ही सोहना डूबता है। इतने में सोहना दुर्गी को पूकारता है। दुर्गी पलटकर देखती है और भागकर चली आती है। मुन्ने को खींचकर अपनी छाती से लगाती है।

दुर्गी को अकेली देखकर कुछ गुण्ड़े-मवाले उसकी हंसुली उतार ले जाता है और बुटों से पैर रौंद देता है। पाँव के अंगुठे से पाव-भर खून निकालता है। दुर्गी रोती है तो सोहना उसे कहता है, ''ले अब टसुए क्यों बहा रही है ? बोला या न मैंने, भीड़ में हाथ पैर-तुड़वायेगी, पर तुझे जिद् जो चढ़ी थी देखूंगी, देखूंगी। देखो अब पुरे छः तोले की हंसूली भी गवाई सुच्ची चांदी की थी। अब तो दुबारा नाम नहीं लेगी छब्बीस जनवरी देखने का।''[20]

इतना होने के बावजुद भी दुर्गी सोहना से कहती है कि अगली बार जरा जल्दी चलेंगे। रात को ही घर से निकलेंगे। इस बार थोड़ी देर हुई है। इस तरह कहानी में नायिका दुर्गी की छब्बीस जनवरी देखने की तीव्र इच्छा को प्रकट किया है।

2.2.12 'गंगा नहाने के बाद' -

इस कहानी में बेटी के प्रति माँ के ममता का चित्रण किया है। कहानी के प्रमुख पात्र सुजाता और सुविर दोनों सुखी दाम्पत्य हैं। उनकी पुत्री स्मित पिता की लाड़ली और माँ की दुलारी प्यारी लड़की है। स्मित की शादी अक्षय नामक लड़के से तय होती है। शादी में हर रीति-रिवाज बड़े धुम-धाम से करते हैं। शादी में सब रिश्तेदार आते हैं। लेकिन सुजाता नाराज है क्योंकि इतने दिन पाली-पोसी लड़की घर छोड़कर जा रही है। दूसरे रिश्तेदार समझाते हैं। बेटियाँ तो पराई होती हैं। जाती हैं तो कलेजे में भौंतरा चाकू खोचकर जाती है। उसे एक-ना-एक दिन जाना होता है। इसी तरह सुजाता को समझाते हैं।

अक्षय भी अच्छा लड़का है। शादी के बाद दोनों अपने घर जाते हैं। महीना भर के बाद एक दिन के लिए पापा से मिलने आते हैं। अक्षय और स्मित को देखकर सुजाता खुश होती है। अक्षय पहली बार ससुराल आता है। तब सुजाता खाना बनाने के लिए किचन में जाती है। लेकिन स्मित कहती है कि माँ जादा झंझट मत करो। अक्षय कुछ भी खा लेगा। माँ खुश रहती है। स्मित पहले पत्र में माँ को सब ठीक है ऐसा लिखती है। खुश नजर आती है। दूसरे पत्र में वही बातें नहीं थी। स्मित थोड़ी दु:खी दिखाई दे रही थी। माँ सुजाता सब सूनना चाहती है। लेकिन स्मित कुछ नहीं बोलती।

अक्षय बहुत संशयी है। वह हर वक्त पत्नी पर संशय लेता है। एक बार अक्षय के दोस्त ने स्मित के कंधे पर शाल रख दिया तो अक्षय चार घंटे नहीं बोलता। अक्षय हर समय व्यस्त रहता है। स्मित को नाराज देखकर सुजाता बेचैन होती है। स्मित के पिताजी सुविर उन्हें स्वतंत्र रखना चाहते हैं। अपने वजुद को साबित रखने के लिए। शायद अपना दु:ख कम करने के लिए उन्हें स्वतंत्रता देना चाहते हैं। लेकिन सुजाता को बड़ा विचित्र अहसास होता है कि जिसमें सभी अधिकारों से मुक्त होने के बाद भी निजी स्मृति कक्षों में भटकने का अधिकार शेष रह गया था। इस कहानी में एक माँ की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है, जो अपनी पुत्री के लिए सदा परेशान रहती है।

2.2.13 ***'धराशायी'*** -

कहानी में नौकरी करनेवाली संघर्ष करके अपना काम करनेवाली नारी का चित्रण किया है। कहानी की नायिका वी. वी. के सहयोगी ऑफिस में साहब की प्रशंसा करते हैं। यह वी. वी. को पसंद नहीं पड़ता। सत्याग्रही साहब 'ग्रेट' आदमी है। हर कर्मचारियों के साथ एक दोस्त की तरह बात करते हैं। उनके सुख-दु:ख की खबर लेते हैं। लेकिन वी. वी. दूसरे कर्मचारियों के बहकावे से सत्याग्रही साहब के विरूद्‌ध आवाज उठाती है, क्योंकि वी. वी. को पदोन्नति चाहिए। वह नहीं मिलती। वी. वी. की साथियों आहुजा और रमणी की पदोन्नती होती है। तब वह साहब से मैं सीनियर होकर भी मुझे पदोन्नति क्यों नहीं मिली। ऐसा सवाल पूछती है। तब सत्याग्रही साहब कहते हैं कि, आप अपना काम करे, आपको पदोन्नति मिलेगी। इससे वी. वी. का समाधान नहीं होता। वी. वी. अपने कर्मचारी

साथियों और युनियन नेताओं के साथ मिलकर हड़ताल, उपोषण करती है। पहले जैसे कर्मचारी काम नहीं करते। ऑफिस में कोई भी काम ठीक ढंग से नहीं चलता।

यह सब देखकर सत्याग्रही साहब वी. वी. को बुलाकर अपमानित करते हैं। वी. वी. भी एक कहानी लिखकर सत्याग्रही साहब के विरूद्ध उसमें लिखती है। धीरे-धीरे वी. वी. अकेली पड़ती है। हड़ताले, नारे अधबीच ही कमजोर होते हैं। ठोस प्रमाणों के अभाव में अपीले रद्दे होती हैं। उसके सब साथी वी. वी. मुड़कर देखने से पहले ही जाते हैं।

वी. वी. के पति तपन बिस्तर पर बेचैनी करवटे बदलता है। उसी को सत्याग्रही साहब सहारा देकर बिस्तर से उठाकर अपने गाड़ी से लेकर जाता है। वी. वी. आखिर पश्चाताप महसूस करती है कि सत्याग्रही साहब ने उसे पहले भी सहायता की थी। कई बार उसके आड़े समय काम आए थे। चंद्रकांता जी ने नारी के संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रण किया है।

2.2.14 'नूराबाई' -

चंद्रकांता की यह प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में एक गरिब परिवार पर हुए अत्याचार का मार्मिक चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका नूराबाई है। वह एक गरीब परिवार में रहती है। उसके पति सूफी किसी लालचंद ध्यानचंद के मिकल फॅक्टरी में परमनंट मजदूर है।

सूफी एक अच्छा धाकड़ मजदूर है। सूफी की एक दिन जद्देशाह से दोस्ती होती है। रातभर ज्यादा काम करते ही वह शराब पीने लगता है। साथ ही रंजोबाई के कोठे की औरत के पास जाता है। वहीं से ही नूरा का भाग्य बदल जाता है। जद्देशाह नुरा को नूरा से नूराबाई नाम देता है। सूफी कुछ दिनों बाद बीमार पड़ जाता है। घर की सारी जिम्मेदारी अकेली नूरा पर आ जाती है। नूरा जी-तोड़ मेहनत कर घर चलाती है। घर में चार बच्चे हैं, पति है। नूरा दो जगह बर्तन माँजने का काम करती है। इसी से सबका पेट नहीं भरता, जद्देशाह सूफी का दोस्त होने के कारण कभी-कभी मदद करता है।

एक दिन नूरा घर में कुछ न होने के कारण चुपचाप बैठती है। तब उसके पति सूफी उसे मार-पीटकर दाग देता है। जद्देशाह यह देखकर सूफी को डाँटता है। बाहर जाकर रोटी और सब्जी

लाकर बेटे को खिला देता है और खुद भी खा लेता है। नूरा के पीठ पर मलहम लगाता है। जद्देशाह रात भर वहीं रहता है। नूरा को आधी रात जब दर्द कम होता है तो नींद आती है। तब जद्देशाह पास आकर उस पर जबरदस्ती करता है और कहता है - "नूराबाई तुझे गुमान किस बात का ? चार हरूफ तू पढ़ी नहीं। कोई कस्ब हाथ में होता तो-सी-पीरोकर कुछ कमा लेती। दो घर बर्तन घीसने से तू हांफने लगती है। गुस्सा-हेकड़ी उसे सोहते हैं, जिसके पल्ले पैसा-धेला हो। तू मेरे कहे में रह और बच्चों को बड़ा कर खाबंद की दवा-दारू कर और बची-खुची ठस्से से गुजार।"[21]

नूराबाई सोच-विचार करके रातभर जद्देशाह के साथ सोती है। जद्देशाह नूरा को सेठ के यहाँ काम दिलवाता है। जद्देशाह सात-आठ महिनों तक नूराबाई के पास आता है। धीरे-धीरे आना बंद करता है। नूरा हर रोज सेठ के यहाँ काम करने जाती है। एक दिन सेठ नूराबाई को कहता हैं कि, तुम बीमार हो तो घर बैठकर आराम करो। बेटी को काम पर भेज दो, झाड़-पुस करेगी। हम भी बच्चोंवाले हैं। सेठानी भी काम सिखाएगी। नूरा सेठ के भूलावे में आकर दूसरे दिन बेटी हसीना को भेज देती है। उसी दिन सेठ हसीना की इज्जत लूटता है। करीब दस-बारह साल की कली रोकर माँ को बताती है। नूरा जवाब पूछने सेठ के पास जाती है। तो सेठ पच्चास रूपये मुँहपर फेककर जाने के लिए कहता है। नहीं तो पुलिस बुला दुँगा। ऐसा कहकर घर से निकाल देता है।

नूरा कमजोर होकर जद्देशाह को बताती है। जद्देशाह उसे बस स्टाप पर बुलाता है और वह घर जाकर हसीना की इज्जत लूटता है। बहुत देर तक इंतजार करके नूरा घर जाती है तो जद्देशाह घर से बाहर आता है। हसीना दरवाजे पर कुम्हलाई सी खड़ी दिखती है। नूरा क्रोधित होकर जद्देशाह की सिर पर लोहे की भारी ओखली उठाकर मारती है। जद्देशाह खून से भीगकर वहीं मर जाता है। कमजोर औरत पर पैसेवाले अत्याचार करते हैं, उसकी इज्जत लूटते हैं। इसका चित्रण चंद्रकांता जी ने इस कहानी में किया है।

2.2.15 'पुनर्जन्म' -

कहानी में गरीब लोगों का चित्रण किया है। कहानी का नायक गोपाल बचपन में गरीब होने के कारण उसे अनेक तरह के समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गोपाल की माँ भी आँखों की

रोशनी कम होने की वजह से घर में ही रहती है। गोपाल बचपन से ही बहुत हरामी है। माँ चाहती है कि गोपाल पढ़-लिखकर कुछ बने। क्लर्क बने, अध्यापक बने लेकिन गोपाल नहीं पढ़ता। वह बिजनेसमैन बनना चाहता है। ऐसे में ही गोपाल की माँ मर जाती है। गोपाल अपना पुराना घर बेचकर बिजनेस शुरू करता है। वह बहुत पैसा कमाता है। शहर में गोपाल का नाम चारों तरफ फैलता है। गोपाल के बचपन के सपने पूरे हो जाते हैं।

कहानी का दूसरा पात्र दयाल एक गरीब लड़का है। वह गोपाल के यहाँ काम करता है। काम करते-करते वह एक दिन पैसे चुराता है। तब गोपाल उसे पकड़ता है। दयाल और गोपाल के बीच में धरपकड़ होती है। उतने में दयाल गोली चलाता है। गोपाल बेहोश होता है। इधर बाकी लोग दयाल की पीटाई करते हैं। दयाल की माँ गोपाल के सामने हाथ फैलाकर माफी माँगती है।

तब गोपाल को अपनी माँ की याद आती है। क्योंकि बचपन में एक दिन गोपाल ने अपने चाचा के पैसे चुराए थे, तब गोपाल की इस हरकत से माँ ने जिया चाचा से माफी माँगी थी। इस कहानी में गरीब दयाल अपने गरीबी के कारण चोरी करता है। कहानी में गरीब गोपाल अपनी हिम्मत से अमीर बन जाता है पर यह देखने के लिए उसकी माँ जिंदा नहीं रहती। इसलिए गोपाल दुःखी होता है। कहानी की भाषा सरल और सुबोध है। इसके साथ इसमें कहावतों, मुहावरों का भी प्रयोग किया है।

निष्कर्ष -

चंद्रकांता ने पूरे कहानी संग्रह में अनिवासी भारतीयों एवं उनके माता-पिता की समस्या, अपने मूल निवास से दूर कहीं शहरों में बस गए बेटों और उनके वृद्ध माता-पिता की समस्या, तेजी से होते सांस्कृतिक संक्रमण की समस्या और आतंकवाद की समस्या को चंद्रकांता ने बहुविध रूपों में कई कहानियों में प्रमुखता से स्वर दिया है। इसके अलावा भी जीवन के कई अहम् प्रश्नों को भी उन्होंने करीब से छूने की कोशिश की है।

उनकी कहानियों की भाषा सशक्त है। परिवेश की माँग के अनुरूप उन्होंने पंजाबी एवं कश्मिरी मिश्रित देशज एवं विदेशी शब्दालियों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। किंतु कहीं-कहीं

ऐसे स्थल आम पाठकों के लिए दुरूह भी हो गए हैं। उनकी कहानियों में स्थान-स्थान पर नए एवं मौलिक उपमान देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ औसत और कुछ अत्यंत चित्ताकर्षक भी हैं। कुछ स्थलों पर तो अच्छे उपमानों की श्रृंखला-सी रच दी गई है। कहीं-कहीं भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रतीकों का भी सहारा लिया गया है। व्यंग्य के पुट का कम-से-कम प्रयोग दृष्टिगत होता है।

अनेक कहानियों का अधिकांश भाग स्मृतियों पर आधारित है। स्वप्न भी एक कहानी का प्रमुख अंग बना है। कहानी संग्रह में कहानियों के क्रम-निर्धारण एवं पात्रों के नामकरण में किंचित अनवधानता दिखाई पड़ती है, क्योंकि विषयगत दृष्टि से कहानियों की विशेषताओं को और अधिक आसानी से अनुभव करें।

चंद्रकांता जी के ये संग्रह अपनी कथ्यगत एवं शिल्पगत मौलिकताओं के कारण हिंदी कहानी साहित्य में एक पृथक स्थान बनाने में निश्चय ही सफल हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. (सं.) गोपाल राय, समीक्षा - अक्तूबर- दिसंबर, 1965, वर्ष, 28, अंक-3, पृ. 10
2. वही,
3. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 65
4. वही, पृ. 94
5. वही, पृ. 119
6. वही, पृ. 130
7. वही, पृ. 148
8. वही, पृ. 154
9. वही, पृ. 181
10. वही, पृ. 190
11. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 2
12. वही, पृ. 24
13. वही, पृ. 36
14. वही, पृ. 39
15. वही, पृ. 68
16. वही, पृ. 73
17. वही, पृ. 79, 80
18. वही, पृ. 91
19. वही, पृ. 104
20. वही, पृ. 110
21. वही, पृ. 137